भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **मई** 2009 | **अंक** 5

अस्तमित—

युग-प्रभा-प्रभाकर....

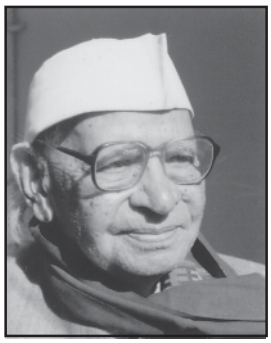

पद्मभूषण **विष्णु प्रभाकर** यानी एक सदी के जीवंत साक्षी, जिनकी रचनाओं में एकत्र है समूची शताब्दी का साक्ष्य; चले गये, विश्वास नहीं हुआ। बढ़ती उम्र के बावजूद अमृत-ऊर्जा के धनी थे विष्णुजी, अत: उनके अवसान की खबर अप्रत्याशित थी खैर, जाना तो था ही चल दिये। पिछले दिसम्बर के आखिर में एक पुस्तक की भूमिका लिखवाते हुए उन्होंने कहा कि 'पुनश्च' करके आगे लिखो— ''जीवन के 97वें वर्ष में हूँ। स्वास्थ्य बिलकुल साथ नहीं देता ××× ज़िन्दगी बेवफा है, यहीं छोड़ जायेगी/ मौत बावफा है, साथ लेकर जायेगी।'' तो इसलिए मौत का स्वागत है और तब तक बैठना या एकदम ठहर जाना नहीं चाहता, चलते ही रहना चाहता हूँ। इस अदम्य जिजीविषा में ही वह ऊर्जा थी, जिसने उन्हें अमृतमय बना रखा था।

1912 में जन्में विष्णु प्रभाकर की साहित्य-यात्रा 1931 से शुरू हुई जो जीवन के अन्तिम पड़ाव 2009 (11 अप्रैल) तक ज़ारी रही। उन्होंने जब लिखना शुरू किया तो साहित्य में प्रसाद-प्रेमचंद थे तो समाज में महात्मा गाँधी। विष्णुजी पर गाँधीजी के व्यक्तित्व और आचरण ने प्रभाव डाला और वे व्यक्तिगत तौर पर नास्तिक होने के बावजूद 'पराई पीर' की संवेदना से गुज़रने वाले 'वैष्णवजन' बन गये। वैचारिक दृष्टि से वे प्रगतिशील तो थे ही, कई मुद्दों पर कम्युनिस्टों से भी आगे थे। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में लेखक महीप सिंह के साक्षात्कार-प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लेखक की अपनी होती है। वह किसी व्यवस्था की दया पर निर्भर नहीं है। लेखक प्राय: व्यवस्था विरोधी होता है,

शेष पृष्ठ 2 पर

गगन दमामा बाजिया

शंख-भेरी-नगाड़े बज उठे, नारों के शोर से गूँज उठा आकाश। 15वीं लोकसभा के चुनाव की रणभूमि में हज़ारों सूरमाओं ने खूब जौहर दिखलाये। अंतत: भारतीय लोकतंत्र द्वारा निर्धारित पंचवर्षीय नि:शस्त्र, रक्तहीन जनक्रान्ति ने अपनी भूमिका निभायी और चयन-प्रक्रिया पूरी हो गयी। अब परिणाम की प्रतीक्षा में कुछ दिन और बीतेंगे फिर क्षेत्र में नयी सरकार सत्ता सँभालेगी। पिछले दशक से क्षेत्रीय-दलों ने भी क्षेत्रीय-सत्ता में अपनी उपस्थिति दर्ज़ करायी और क्रमश: 'रा-ज-ग' एवं 'सं-प्र-ग' जैसी गठबंधन सरकारें बनीं। दोनों सरकारों ने तमाम अंतर्विरोधों के बावजूद अपना कार्यकाल पूरा किया। लगभग दो दशक पहले जिन आर्थिक-नीतियों की प्रस्तावना आरम्भ की गयी थी उन्हीं के व्यावहारिक प्रयोग से देश की विकास-प्रक्रिया गतिशील हो उठी। मुक्त-बाज़ार व्यवस्था के बीच चल पड़ा प्रगति-चक्र, विदेशी पूँजी का निवेश हुआ, उद्योगों में बढ़ोत्तरी हुई, तकनीक-दक्ष युवकों का देश-विदेश में समायोजन होने लगा, बाज़ार का सूचकांक आश्चर्यजनक रूप से ऊपर चढ़ने लगा। इसी के बीच गतवर्ष अमेरिका की मंदी ने दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया, फिर भारत कैसे अछूता रहता। हमारे बाज़ार का सूचकांक नीचे आ गया, युवकों में निराशा छा गयी, समग्र-विकास-दर भी 8 प्रतिशत से 6 प्रतिशत पर आ गयी। **इस मंदी ने पश्चिमी अर्थशास्त्र की स्थापनाओं को 1930 की महामंदी के बाद दुबारा बेनकाब किया है। अत: केन्द्र में सत्तासीन होने वाली नयी सरकार से हमारी यह आग्रहपूर्ण-अपेक्षा है कि पश्चिमी अर्थशास्त्र के अंध-अनुकरण के बजाय अपनी देसी-प्रकृति के अनुकूल राष्ट्रीय-अर्थतंत्र की रचना करें जिससे आन्तरिक विकास को गति मिल सके। एशिया को आर्थिक-उपनिवेश बनाने की यूरोपीय आकांक्षा को खण्डित करने का यह पहला चरण हो सकता है।**

दूसरी बात यह कि हमारी संसद के चुने गये 542 जन-प्रतिनिधियों में अधिकांश सुशिक्षित होते हैं, किन्तु संसद में विभिन्न मुद्दों पर बहस के समय वे अशिक्षित प्रतीत होते हुए जितने अमर्यादित हो जाते हैं, पारस्परिक गाली-गलौज और सामूहिक-नारेबाजी द्वारा वे जिस संसद की तस्वीर पेश करते हैं, वह देश की जनता का और राष्ट्र का अपमान है। इन माननीय जन-प्रतिनिधि के चाल-चरित्र-चेहरे से जनता अच्छी तरह वाकिफ है, उसे बरगलाया नहीं जा सकता। अत: संसदीय-समिति ऐसे माननीयों को अनुशासन के दायरे में लाकर उन्हें जनता के बीच वापस भेज दे। फिर जनता को ही तय करने दे।

तीसरी बात और एक निवेदन कि संसद-सदस्य प्रस्तावित विषयों का गम्भीर अध्ययन करें, नवीनतम सूचनाओं के साथ लोकसभा में सार्थक-विमर्श करें, संरचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करें। न कि संसद को निरर्थक बहसों में उलझाकर

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

क्योंकि व्यवस्था बहुत ही शीघ्र अवसरवादी राजनीति और शोषण का शिकार हो जाती है।'' इस कथन में विष्णु प्रभाकर के लेखकीय व्यक्तित्व की स्वतंत्रता झलकती है जो बिना किसी प्रलोभन या समझौते के अपने दायित्व का निर्वाह करता है। इसी लेखकीय स्वतंत्रता और दायित्व के साथ उन्होंने ढलती रात, स्वप्नमयी, हत्या के बाद, नवप्रभात, डॉक्टर, प्रकाश और परछाइयाँ, बारह एकांकी, अशोक, संघर्ष के बाद, आवारा मसीहा, अर्द्धनारीश्वर, धरती अब भी घूम रही है, क्षमादान, दो मित्र, पाप का घड़ा, होरी, पंखहीन आदि बहुपठित कृतियों की रचना की। उनकी बहुचर्चित कृति 'आवारा मसीहा' ने तो बांग्ला कथाशिल्पी शरत्चन्द्र के गुमशुदा-व्यक्तित्व को पुनर्जीवित कर दिया। हिन्दी ही नहीं बांग्ला भाषा के साहित्यकारों-पाठकों ने भी इस कृति के देवलीना बनर्जी द्वारा किये गये अनुवाद 'छन्नछड़ा महाप्राण' के माध्यम से अपने प्रिय शरत् बाबू का जीवंत साक्षात्कार किया। किसी का यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि ''विष्णु प्रभाकर ने अपनी इस रचना द्वारा हिन्दी पर बांग्ला-साहित्य के ऋण को बहुत कुछ चुका दिया है।'' भारतीय ज्ञानपीठ ने उनके उपन्यास 'अर्द्धनारीश्वर' पर उन्हें 'मूर्तिदेवी-सम्मान' से अलंकृत किया तो भारत सरकार ने उनके लेखकीय-व्यक्तित्व को 'पद्मभूषण' के गौरव से गरिमा प्रदान की। इसके साथ-साथ उन्हें 'हिन्दी अकादमी पुरस्कार' 'शलाका सम्मान', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'शरत् पुरस्कार' आदि कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। अक्षर-पुरुष विष्णु प्रभाकर के प्रति 'भारतीय वाङ्मय' की प्रणत-श्रद्धांजलि!

विष्णु प्रभाकर ने अपनी वसीयत में अपना सम्पूर्ण अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की थी। इसलिए उनके पार्थिव शरीर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को सौंप दिया गया।

आदि इति के
संचित इतिहास
ग्रन्थ हमारे।

पुस्तकों में है
अतीत वर्तमान
और भविष्य।

हो जाते कभी
मित्र भी शत्रु, किन्तु
पुस्तक नहीं।

जड़े हैं हीरे
व मोती पुस्तकों के
पन्ने पन्ने में।

— नलिनीकान्त, अंडाल, पश्चिम बंगाल

पृष्ठ 1 का शेष

किसी सही काम के कार्यान्वयन में अवरोध पैदा करें। वस्तुत: यह प्रवृत्ति जनता के प्रति असंवेदनशील और अप्रतिबद्ध मानसिकता की उपज होती है। इसके लिए **सरकार और विभिन्न राजनीतिक दलों के पुरोधाओं को चाहिए कि अपने सदस्यों की नयी-पुरानी पीढ़ी के बीच अध्ययन-संस्कृति का विकास करें, पुस्तकों में उनकी अभिरुचि जगायें। नयी प्रेरणा और जिज्ञासा-भाव लेकर जब पुस्तकालयों के गम्भीर वातावरण में राजनीतिक-चेतना पनपेगी तो भारतीय-राजनय का परिदृश्य किसी भी वैश्वक चुनौती का मुकाबला करने में समर्थ होगा।**

15वीं लोकसभा में चुन कर आये जन प्रतिनिधियों और बहुमत द्वारा निर्वाचित जनता की सरकार को अपनी शुभकामनाएँ देते हुए हम कहना चाहेंगे कि चुनौतियाँ सामने हैं, अन्दर बाहर सभी मोर्चों पर संघर्ष जारी है—

गगन दमामा बाजिया, पड़त निसाने घाव।
खेत पुकारे सूरमा, अब लड़ने का दाँव॥

सर्वेक्षण

खून के घूँट : यह केवल परिस्थितियों के बीच आक्रोशजन्य मुहावरा नहीं है बल्कि पास-पड़ोस की मानवीय-त्रासदी के बीच विवश-मानसिकता का इज़हार है। चूँकि यह त्रासदी कोई प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि सत्ता के खूनी खेल से उपजी है जिसका शिकार है आम-आदमी जो अपनी बदहाली में खून के आँसू बहा रहा है। इनकी वर्तमान त्रासदियों की जड़ें अतीत में हैं। वे श्रीलंका के तमिल हैं, राजस्थान के बाड़मेर, गंगानगर क्षेत्र में सीमा पार से आये हिन्दू हैं, देश में ही कश्मीरी पण्डित हैं, पाकिस्तान के बलूच-पठान और दूसरे मुसलमान हैं जो इस त्रासदी में साँस ले रहे हैं। हमसे बहुत दूर नहीं हैं इज़रायल-फिलस्तीन, इराक-अफगानिस्तान जहाँ इन मानवीय त्रासदियों की आवृत्ति का सिलसिला जारी है। इन त्रासदियों में पीड़ित मानव-समुदाय के बीच अंतर्राष्ट्रीय खैरात और चिकित्सा सुविधा मुहैया कराना ही समस्याओं का समाधान नहीं है बल्कि इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ पर खड़ी दुनिया की सरकारों का मुखौटा बदलने की जरूरत है, उन्हें मानवीय संवेदनाओं से रू-ब-रू करने की जरूरत है।

कौमी-जवाब : पिछले दिनों पाकिस्तान के पूर्व जनरल मुशर्रफ साहब दिल्ली तशरीफ लाये। वहाँ एक कान्फ्रेंस में दरपेश दुनियावी मसलों पर तकरीर करते हुए उन्होंने हिन्दुस्तानी मुसलमानों की बदहाल-तस्वीर पेश की। उनकी तकरीर के बाद एक भारतीय मुसलमान ने दस्तन्दाज़ी करते हुए कहा, ''जनरल साहब, आपने तो यहाँ भी पाकिस्तान की सियासत शुरू कर दी। आपको मालूम होना चाहिए कि आपके पाकिस्तान की टोटल आबादी से काफी ज़्यादा मुसलमान यहाँ रहते हैं और वहाँ से ज़्यादा महफूज़ हैं। हम यहाँ पूरी आज़ादी से जीते हैं, हमारे रस्मों-रिवाज़ में किसी का कोई दख़ल नहीं। जब भी हमारे साथ कोई हादसा होता है तो यहाँ के सत्तर फीसदी लोग हमारे बग़लगीर होते हैं। माफ कीजियेगा, जनरल साहब! हिन्दुस्तान एक कौम है जिसे आप बाँट नहीं सकते।'' फक् पड़ गये थे जनरल साहब! फिज़ा में तैर रहे थे कुछ अल्फाज़—

हमारा खून अमानत है नस्ले-नौ के लिए।
हमारे खून पे लश्कर न पल सकेंगे कभी॥

—परागकुमार मोदी

यंत्र अनुवाद की समस्या और सम्भावना

—श्रीनारायण समीर
संयुक्त निदेशक, अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र, बेंगलूर

अनुवाद स्वभाव से अन्तरभाषिक होता है। यह दो भाषाओं के बीच सम्पन्न होता है। इसमें एक भाषा (स्रोत भाषा) में कही गई बात का दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में अंतरण होता है। अंतरण भी बात का नहीं, बात के अर्थ का होता है। स्रोत भाषा के कथन के अर्थ का। अनुवाद करते समय अनुवादकर्ता कथन का अर्थ ग्रहण करता है और कथन के शब्दों को छोड़ता चलता है। पुन: कथन के अर्थ को दूसरी भाषा के शब्दों के साथ जोड़ता है। इस प्रक्रिया में कथन के अर्थ का दूसरी भाषा के शब्दों में रूपान्तरण हो जाता है। यही रूपान्तरण अथवा अन्तरण अनुवाद होता है।

अनुवाद की प्रक्रिया में जो अन्तरण होता है, मोटे तौर पर वह भाषा के कथन का होता है। एक भाषा के कथन का दूसरी भाषा में अन्तरण अर्थात् भाषान्तरण। भाषान्तरण की इस प्रक्रिया में विचार यथावत् रहता है—अनुवाद के बाद भी। अन्तर आता है तो केवल भाषा में जो विचार की वाहक होती है। इस प्रकार अनुवाद से एक भाषा में व्यक्त विचार दूसरी भाषा में भी सुलभ हो जाता है। इस तरह से अनुवाद के जरिये भाषाओं के बीच पुल बनता है और भाषाओं के बीच संवाद कायम होता है। इसी कारण से अनुवाद को भाषिक संवाद कहा जाता है।

आजकल टेलीविजन, रेडियो, अखबार, न्यूज एजेंसियों, उपग्रह चैनलों सहित संचार के विभिन्न साधनों की विश्वव्याप्ति एवं प्रसिद्धि में अनुवाद की भूमिका स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। विभिन्न राष्ट्रों और भाषाओं की अनुवाद अकादमियों, समितियों, संस्थानों तथा निजी संगठनों एवं व्यक्तियों के द्वारा निरन्तर किए जा रहे अनुवाद कार्य दरअसल एक देश और एक भाषा की वैज्ञानिक खोज और रचनात्मक प्रगति को मूल देश और भाषा से परे अन्य देशों तथा भाषा-भाषियों तक पहुँचाने के निमित्त हैं। फिर भी अनुवाद की स्थिति संतोषजनक नहीं है। वह अनुसंधान और विकास से कदमताल नहीं कर पा रहा है। बहुत पीछे है। दुनियाभर में जितनी वैज्ञानिक खोजें होती रहती हैं और उनका लिखित साहित्य जितनी प्रचुरता में सामने आता रहता है, उस हिसाब से अनुवाद नहीं हो पाते। इसके कारण हैं। साफ और संगत कारण हैं। इन्हें समझना होगा।

असल में अनुवाद एक सृजनात्मक कर्म है। यह (अभी तक) एक मानवीय कर्म है। और मनुष्य के ज्ञान तथा क्षमता की सीमा होती है। किसी भी अनुवादकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं कि वह अपनी जानकारी वाली/गतिवाली इतर भाषा की सारी वैज्ञानिक खोजों और रचनात्मक उपलब्धियों का तत्काल अनुवाद कर दे, जिससे कि वे दूसरी भाषा में अविलम्ब सुलभ हो जाएँ। वस्तुत: अनुवाद एक ज्ञानानुशासन है और किसी भी बात, पाठ, कथन अथवा विषय का अनुवाद करने से पहले उसकी तैयारी करनी पड़ती है। अनुवाद की एक प्रक्रिया होती है और इसमें विभिन्न चरणों से अनुवाद को गुजरना पड़ता है। इसलिए अनुवाद में समय लगता है। और कभी-कभी तो यह समय काफी लम्बा खिंच जाता है। साथ ही किसी भी भाषा में हर कोई अनुवादक नहीं होता। अनुवादक गिने-चुने लोग ही होते हैं। जबकि दुनिया की सभी भाषाओं में और ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं में नई-नई खोजों के आए-दिन इतने सारे नतीजे और साहित्य प्रकाशित होते रहते हैं कि उन सबका तत्काल अनुवाद सम्भव नहीं होता। फिर विज्ञान में एक ही विषय की शाखा-प्रशाखाओं में खोज की गति इतनी तीव्र होती है कि उन सबका समय से अनुवाद करना मुश्किल होता है। यंत्र अनुवाद (मशीन ट्रांसलेशन) इसी मुश्किल को आसान बनाने की संकल्पना है।

इस संकल्पना में यह प्रत्याशा की गई कि यंत्र के द्वारा अनुवाद के कार्य में तीव्रता आएगी और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के प्रकाशित विदेशी साहित्य का तत्काल अनुवाद सम्भव हो पाएगा। इसके मूल में यह धारणा रही कि मनुष्य की अपेक्षा यंत्र सुनिश्चित और सुस्पष्ट नियमों से पूरी तरह बंधा होता है तथा अपेक्षानुरूप शीघ्र कार्य सम्पादित करता है। साथ ही यंत्र से न गलतियाँ हो सकती हैं और न यंत्र काम से थकता है। इसलिए भाषा और व्याकरण के नियम यदि सुनिश्चित कर दिए जाएँ तो यंत्र से शीघ्र अनुवाद सम्भव होगा। इस बारे में कम्प्यूटरविद् श्री नरेश कुमार की भी ऐसी ही धारणा है। उन्होंने यंत्र अनुवाद की समस्या पर विचार करते हुए मशीन की कार्य प्रणाली के बारे में लिखा है—

''.....मनुष्य की अपेक्षा ये मशीनें सुनिश्चित और सुस्पष्ट नियमों का कहीं अधिक शीघ्रता से पालन करती हैं। ये मानव की तरह न तो गलतियाँ ही करती हैं, न ही थकती हैं। वास्तव में इन मशीनों का उद्देश्य अभी तक ऐसे ही कार्य करना रहा है, जिसमें किसी प्रकार की सर्जनात्मकता की आवश्यकता न हो। बस, उनका कार्य महज पूर्व निर्धारित नियमों का पालन करना है।''

यंत्र अनुवाद की संकल्पना वस्तुत: कम्प्यूटर से अनुवाद प्राप्त करने की अवधारणा है। पश्चिम में कम्प्यूटर के विकास और उसके बहुद्देशीय प्रयोग से यह अवधारणा बलवती हुई कि कम्प्यूटर अनुवाद का काम भी कर सकता है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसा लगा कि कम्प्यूटर की संरचनागत विशेषताएँ ऐसी हैं कि यदि उसे तदनुरूप अनुकूलित किया जाए तो वह अनुवाद भी कर सकता है। शुरू-शुरू में यह विचार चाहे जितना कच्चा, आधा-अधूरा और प्रयोगसाध्य रहा हो, परन्तु वैज्ञानिकों ने इस अनुप्रयोग में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। भाषा-विज्ञानियों को साथ लिया। जरूरी संसाधक, सॉफ्टवेयर आदि विकसित किए। यंत्र की समझ में आनेवाले भाषा-व्याकरण की रचना की। भाषाओं का यंत्रानुरूप संरचनागत विश्लेषण तैयार किया और प्रयोग के पथ पर निकल पड़े। इसी का नतीजा है कि आज कम्प्यूटर से अनुवाद होने लगा है। इस अनुवाद पद्धति को परिभाषित करते हुए तथा इसकी गुणवत्ता और सम्भावना पर विचार करते हुए भाषाविज्ञानी डॉ० जी० रविशंकर ने लिखा है—

''मशीनी अनुवाद मूलत: स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में संगणक यंत्र की सहायता से अनुवाद करने की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में इनपुट एक भाषा सामग्री होता है। संगणक यंत्र की आन्तरिक व्यवस्था में स्रोत एवं लक्ष्य भाषा के शब्द, पद एवं व्याकरणिक नियम तथा अनुवाद के विशिष्ट नियम अंकित रहते हैं। आउटपुट के रूप में अनूदित सामग्री तुरन्त प्राप्त होती है। लेकिन उसकी गुणात्मक शुद्धता एवं उपयुक्तता पर प्रश्नचिह्न लगा ही है, क्योंकि वे बहुत कुछ सामग्री विशेष की प्रकृति पर अर्थात् इस प्रश्न पर कि क्या वह सामग्री साधारण है या तकनीकी है या साहित्यिक है या बोलचाल की है—निर्भर है। मशीनी अनुवाद संगणक यंत्र के द्विभाषिक डाटाबेस तथा अंतरण नियमों की गुणवत्ता पर भी निर्भर है।''

अलबत्ता कम्प्यूटर आधारित अनुवाद ज्यादातर मामलों में सटीक और उपयुक्त नहीं होता। कभी-कभी अत्यन्त गलत भी होता है। परन्तु इस दिशा में वैज्ञानिकों और भाषाविज्ञानियों का प्रयास और अनुसंधान अभी थमा नहीं है। सही और सटीक अनुवाद सम्भव करने के प्रयास निरन्तर और व्यापक स्तर पर जारी हैं और इस प्रयास में आशातीत सफलता मिलने लगी है।

हिन्दी विश्व की महान भाषा है। देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। **—राहुल सांकृत्यायन**

(Hindi Translation of Dr. David Frawley's book AWAKEN BHARATA : A Call For India's Rebirth)

भारत के नव-निर्माण का आह्वान [खण्ड-1 : हिन्दू जागृति का आह्वान] से....

अध्याय : 1.1 भारत की जागृति के सूत्र

विश्व का एकमात्र सर्वाधिक प्राचीन धर्म है **'हिन्दू धर्म'** (सनातन धर्म) जिसका न कोई एक विशेष प्रवर्तक है और न ही जिसके प्रारम्भ का कोई ऐतिहासिक उल्लेख या प्रमाण उपलब्ध है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एवं काल के प्रारम्भ से ही हिन्दू धर्म का भी उद्भव माना जाता है इसीलिये इसे सनातन धर्म की संज्ञा दी गई है। तथापि बहुतों को, यहाँ तक कि बहुसंख्यक भारतवासियों को भी यह जानकारी नहीं होगी कि विश्व का सर्वाधिक पुरातन राष्ट्र, भारत (इण्डिया) है। भारत के 5000 वर्ष पूर्व के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में दो महासागरों के मध्य के सप्त नदियों वाले विशाल भूखण्ड का वर्णन मिलता है। प्राचीन वैदिक ग्रन्थों यथा—शतपथ ब्राह्मण में पश्चिमी तथा पूर्वी महासागर के मध्य भू-भाग के अनेक यशस्वी नरेशों का वर्णन मिलता है। इस विशाल भू-भाग के निवासी एक समान संस्कृति पर आधारित धार्मिक क्रिया-कलापों का सम्पादन करते हुए आध्यात्मिक जीवन जीते थे।

विश्व साहित्य का सर्वाधिक पुरातन एवं वृहद् काव्य है 'महाभारत' जिसकी रचना ईसा के 2000 वर्ष पूर्व महर्षि वेदव्यास द्वारा हुई थी। महाभारत का शाब्दिक अर्थ है वृहद् भारत। दो महासागरों के मध्य के भूखण्ड की संस्कृति एवं धर्म का यह एक अद्भुत विस्तृत प्रलेख है। पश्चिम में गांधार (अफगानिस्तान) से लेकर पूर्व में प्राग्ज्योतिषपुर (आसाम) तथा उत्तर में कैलाश (तिब्बत) से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक के विशाल क्षेत्र का विस्तृत विवरण इस महान् ग्रन्थ में उपलब्ध है। यह पूरा भू-भाग एक समान समुन्नत संस्कृति, जीवन-शैली तथा मूल्यों के आधार पर अद्भुत रूप से सूत्रबद्ध था।

महाभारत में हिन्दू धर्म के विविध देवी-देवताओं यथा—शिव, विष्णु, शक्ति (देवी) की उपासना के अतिरिक्त वर्णाश्रम धर्म (हिन्दू सामाजिक व्यवस्था तथा जीवन के चार स्तर—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास), सांख्य तथा वेदान्त, दर्शन एवं योग आदि का विस्तृत विवेचन मिलता है। महाभारत के मूलभूत सिद्धान्त एवं व्यवस्थाएँ वेदों पर आधारित हैं। इतनी शताब्दियों के पश्चात् भी हिन्दू धर्म के उन सिद्धान्तों एवं उपदेशों के मूलभूत ढाँचे में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

यदि हम मानव-इतिहास को देखें तो विश्व में इतनी प्राचीन संस्कृति अथवा धर्म के सतत प्रवाह वाला तथा इतने समृद्ध साहित्य की धरोहर वाला कोई अन्य देश नहीं है। प्राचीन एवं समुन्नत संस्कृतियों वाले देश ग्रीस, रोम, पर्सिया, बेबिलोनिया तथा मिस्र भी काल के थपेड़ों को झेल नहीं सके। उनकी संस्कृतियाँ एवं साहित्य दोनों ही काल के गाल में समा गए। विश्व की कोई भी संस्कृति प्राचीन ऋषियों की पुण्यभूमि भारत की चिरस्थायी संस्कृति की भाँति गत्यात्मक, विविधता से परिपूर्ण एवं सुसंगत नहीं है।

भारत कभी भी आधुनिक संकीर्ण राजनीतिक राष्ट्रीय इकाई की अवधारणा के अनुरूप एक राष्ट्र के रूप में नहीं था। राष्ट्र की आधुनिक अवधारणा सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक एकत्व पर आधारित नहीं है। राष्ट्र की आधुनिक परिभाषा बाह्यतत्वों यथा—भाषा, जाति, आर्थिक, भौगोलिक अथवा राजनीतिक सीमाओं से आबद्ध है। मध्ययुग से अद्यावधि चले आते हुए विश्व में कुछ राष्ट्र ऐसे भी हैं जो मज़हबी कट्टरता के आधार पर अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। ऐसे राष्ट्र विश्व में मानव-चेतना के क्रमविकास एवं मानवता के लिये सहायक होने के बजाय हानिकारक ही सिद्ध हुए हैं। भारत की ब्रह्माण्डीय सुव्यवस्था में सह-अस्तित्व की जो सुघटित संकल्पना है उसका विश्व के किसी भी राष्ट्र की संकल्पना में अभाव ही है इसीलिये वे काल के प्रवाह का सामना करने में अक्षम रहे।

भारत आध्यात्मिक संस्कृति पर आधारित एक अद्भुत देश है जहाँ के निवासियों में आत्मानुभूति की भावना अनुस्यूत है। यह भावना किसी चर्च अथवा धार्मिक नेता द्वारा आरोपित नहीं अपितु स्वभावगत है। भारत राजनीतिक स्वार्थों तथा धार्मिक कट्टरता से परिभाषित देश नहीं है अपितु वहाँ की संस्कृति की पृष्ठभूमि में योग एवं ध्यान की विशिष्ट एवं समृद्ध परम्परा है। भारत का शरीर भारत की ही पुण्य आत्मा से अनुप्राणित है और यही भारतवर्ष का शक्ति-स्रोत है। भारत की यह आत्मा ही भारत माता, माँ भारती अथवा माँ दुर्गा है। यह केवल भारत की आत्मा ही नहीं अपितु इस ब्रह्माण्ड में दैवी शक्ति का मूर्तिमान विग्रह है और सम्पूर्ण मानवता की आध्यात्मिकता की रक्षक है **(या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता)।**

भारत कभी भी योगियों, संन्यासियों अथवा विरक्तों की ही भूमि नहीं रहा। भारतीय आध्यात्मिकता का उत्थान मानव की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के दमन पर आधारित नहीं रहा अपितु कला एवं विज्ञान सहित जीवन की समग्र विधाओं की प्रगति का भी सहायक रहा है। भारतीय संगीत, नृत्य, गणित, ज्योतिष एवं औषधि शास्त्र के सर्वाङ्गीण विकास में यह तथ्य दृष्टिगोचर होता है। भारत की आध्यात्मिक जिज्ञासा निराशावादी अथवा जीवन से पलायनवादी नहीं है अपितु जीवन को समग्रता से जीने की प्रेरणा प्रदान करती हुई जीवन के एकमात्र लक्ष्य मोक्षप्राप्ति तथा इन्द्रियातीतत्व की ओर ले जाने में सहायक होती है। मोक्ष की यह अवधारणा, बाह्य परिस्थितियों पर आधारित पाश्चात्य अवधारणा से सर्वथा भिन्न है जो वासना एवं कर्मफल की इच्छा से रहित होकर निष्काम कर्म की प्रेरणा देते हुए शाश्वत आनन्द को प्राप्त करने की भूमिका प्रदान करती है। भारत सदैव से ही आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जागरण का क्षेत्र रहा है जहाँ आत्मिक अभ्युत्थान के लिये दोनों एक- दूसरे के सहयोगी रहे हैं।

लेकिन दुर्भाग्यवश यही पुण्य भूमि करीब 1000 वर्ष पूर्व से विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा प्रताड़ित एवं पददलित होती रही। बाह्यकारणों के अतिरिक्त वर्णाश्रम एवं जाति-प्रथा के विकृतिकरण ने भी इस देश के पतन में योगदान दिया। लेकिन इस लम्बे अन्धकार युग में भी भारत की ओजस्विता एवं आन्तरिक ऊर्जा का कभी अभाव नहीं हुआ। ऐसे निराशा एवं अवसाद के वातावरण में भी उस युग में अनेकों महान् आध्यात्मिक विभूतियों एवं योगियों का प्राकट्य हुआ। बाह्यरूप से आक्रान्त होते हुए भी भारत की आन्तरिक शक्ति एवं ओजस्विता बनी रही। 19वीं शताब्दी में भारत में एक नये जागरण की लहर पैदा हुई और उसी की परिणति विदेशी शासन के अन्त के साथ भारत की स्वतन्त्रता के रूप में हुई। प्राचीन भारत की आशा एवं आकांक्षाएँ पुन: पल्लवित एवं पुष्पित होने को व्यग्र हो उठी हैं। पचास वर्ष से भी पूर्व भारत ने सदियों से चले आते हुए विदेशी आधिपत्य से मुक्ति प्राप्त की। विश्व सभ्यताओं में से एक सभ्यता का यह एक अद्भुत एवं अतुलनीय पुनरुत्थान का प्रयास है। विश्व के आध्यात्मिक मानसिकता वाले लोग भौतिकवाद की अन्धी दौड़ में व्यस्त मानवता के त्राण के लिये एक समुन्नत संस्कृति एवं मानवता के प्रतिमान के रूप में भारत की ओर बड़ी आशाभरी निगाहों से देख रहे हैं। भारत की स्वतंत्रता का श्रेय राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ भारत के महान् संत एवं तपस्वी जैसे—रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, रमण महर्षि, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी शिवानन्द तथा इनके जैसे ही अन्य संतों को भी है जिनके अभूतपूर्व आध्यात्मिक विचारों ने भारत के जनमानस को आन्दोलित एवं अनुप्राणित किया है। क्या बीते हुए स्वर्णिम युग की आध्यात्मिक परम्परा के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं भौतिक कीर्ति का संवाहक यह भारत देश पुन: जाग्रत् होकर विश्व का नेतृत्व नहीं करेगा ?.../*विस्तृत अध्ययन हेतु पढ़ें—*

भारत के नव-निर्माण का आह्वान

डॉ० डेविड फ्राली
(वामदेव शास्त्री)

अनुवाद :
केशव प्रसाद कायाँ

प्रथम संस्करण : 2008 ई०

मूल्य : सजि. रु० 320.00,
अजिल्द रु० 225.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

बाल पुस्तकालय : किताबों से बनी एक कहानी

—सुरेखा पाणंदीकर
लेखिका एविक बाल पुस्तकालय योजना की संचालक हैं

तब मैंने बाल पुस्तकालय की कल्पना सबके सामने रखी और सब सदस्यों ने उसे पसन्द किया। हमारी संस्था के संस्थापक दिवंगत शंकर पिल्लै ने इस योजना का समर्थन किया। चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट के मैनेजर एस०के० चटर्जी ने हिन्दी और अंग्रेजी पुस्तकों के तीन सेट दिए। फिर हम सदस्यों ने अपने यहाँ से तथा अपने मित्रों से बच्चों की पुस्तकें एकत्रित कीं। बाल साहित्य के प्रकाशकों ने भी पुस्तकें दीं और 4000 पुस्तकों से 9 अप्रैल, 1983 के दिन स्वर्गीय शंकर पिल्लै ने हमारे 9 सदस्यों द्वारा अपने घरों में पुस्तकालय चलाने की योजना का श्रीगणेश किया।

प्रारम्भ से ही बच्चों में उत्साह था। नीतू ने गीता से, शरद ने मदन से, बबली ने बीना से पुस्तकालय की बात की और देखते-देखते बच्चों की कतारें लगने लगीं। प्रारम्भ में अभिभावकों ने कहा, ''बच्चे पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ेंगे तो होमवर्क कब करेंगे? पढ़ाई कब करेंगे?'' लेकिन जब उन्होंने पाया कि पुस्तकें पढ़ने से बच्चों का भाषा ज्ञान, समान्य ज्ञान बढ़ रहा है। बच्चों की एकाग्रता बढ़ने से वे स्कूल की पुस्तकें भी अच्छी तरह से पढ़ कर अच्छे अंक प्राप्त करने लगे हैं तब अभिभावक सहभागी होने लगे।

और फिर कहानी में एक सुहाना मोड़ आया जब 1991 में हमारी बाल पुस्तकालय योजना को इबी असाही इंटरनेशनल रीडिंग प्रमोशन पुरस्कार मिला जिससे हम और बाल पुस्तकालय खोल सकें। हमने बच्चों के साथ काम करने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं से सम्पर्क किया और झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले बच्चों के लिए पुस्तकालय खोले। उत्साह बढ़ा। अब तक हमारे 70 बाल पुस्तकालय खुल चुके थे।

तब आया कच्छ में भूचाल। वहाँ के बच्चों के लिए जब स्कूल दोबारा खोले गए तो हमने 20 स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए किताबें दीं। सुनामी के कहर से तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और अंडमान में हजारों बच्चे अनाथ हुए। विचलित हुए। लोगों ने खाना, कपड़ा भेज कर उनके स्वास्थ्य के बारे में सोचा। हमारे संस्थान ने उनके मन के स्वास्थ्य और संतुलन के लिए बाल पुस्तकालय खोले। हमारे कार्यकर्ता उनके साथ रहे। रंग-बिरंगी पुस्तकों के पुस्तकालय खोले। कठपुतलियाँ और संगीत द्वारा कहानियाँ सुनाईं और सुनामी के कहर से संवेदनशून्य बने उन बच्चों के चेहरों पर हम दोबारा मुस्कान ला सके। पुस्तकों ने उनका मानसिक उपचार किया।

यूनिसेफ तथा इंटरनेशनल बोर्ड ऑन बुक्स फॉर यंग (इबी) की वित्तीय सहायता से हमने ऐसी जगह बाल पुस्तकालय खोले जहाँ बच्चों ने या स्कूल के अध्यापकों ने भी पुस्तकालय नहीं देखे थे। जैसे अरुणाचल के तेजू में, गुजरात के धर्मपुर में, उत्तर प्रदेश के ललितपुर में, दमन के आदिवासी बच्चों के लिए, जयपुर के पास के गाँवों में। केवल पुस्तकें देकर हमारा काम समाप्त नहीं होता। हम साथ-साथ पुस्तकालय चलाने वाले स्वयंसेवकों, लाइब्रेरियनों, अध्यापकों तथा अभिभावकों के लिए कार्यशाला आयोजित करते हैं। उनको बताते हैं कि पुस्तकालय के पुस्तकों का उपयोग शिक्षा, मनोरंजन, संस्कार और उपचार के लिए वे कैसे कर सकते हैं। पुस्तकालयों में बच्चों की पठन रुचि बढ़ाने के लिए कथा कथन, कथा वाचन, कथा चित्रण, कथा मंचन जैसी पुस्तकों से जुड़ी अनेक गतिविधियाँ भी हम करते रहते हैं। बच्चों का उत्साह बढ़ाने प्रतिवर्ष 'वर्ष का उत्तम पाठक' का पुरस्कार प्रत्येक पुस्तकालय के दो बच्चों को दिया जाता है। स्वयंसेवी लाइब्रेरियन के लिए प्रतिवर्ष एक 'वर्ष का उत्तम लाइब्रेरियन' का पुरस्कार देते हैं। आज हमारे 155 बाल पुस्तकालय चल रहे हैं। इस रजत जयंती वर्ष में हमने फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के सौजन्य से 25 बाल पुस्तकालय खोले। इसमें नेशनल बाल भवन ने हमारी सहायता की और दूरदराज के उनके बाल केन्द्रों में बाल पुस्तकालय खुलवाए। इसी वर्ष हमने 'पुस्तक उपहार' योजना प्रारम्भ की। इसके तहत 5000 बच्चों जिन्होंने कभी कहानी की पुस्तकें देखी नहीं थी, उनको कहानी, कविता, नाटक आदि की पुस्तकें उनका नाम लिखकर उपहार में दी। इसके बाद 'आओ मिलकर पढ़ें' कार्यक्रम शुरू किया। 25 वर्ष की इस कहानी में हमारे कार्यालयों को क्या मिला? न इसमें पैसा है, न ग्लैमर। पर इन सबसे मूल्यवान वस्तु हम सबको मिली और वह है पुस्तक पढ़कर बच्चों के चेहरों पर जो आनन्द दिखाई देता है और जब वह दोबारा पुस्तक माँगते हैं। और यही इनाम लेकर हम इस कहानी को आगे बढ़ाते रहेंगे क्योंकि यह है न समाप्त होने वाली कहानी। —*'हिन्दुस्तान' से साभार*

भारत की अखण्डता और व्यक्तित्व बनाये रखने के लिए हिन्दी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक है।

—महाकवि शंकर कुरूप

दयाल सिंह पब्लिक लाइब्रेरी
जहाँ है ज्ञान का भण्डार

शिक्षा इंसान को आत्मनिर्भर बनाती है लेकिन महंगी पुस्तकों को खरीद पाना हर वर्ग की पहुँच में नहीं होता इसलिए कुछ पुस्तकालय ऐसे हैं जो प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी हैं। इनमें से एक है 'दयाल सिंह लाइब्रेरी'। इसकी स्थापना विभाजन से पहले सरदार दयाल सिंह द्वारा सन् 1928 में लाहौर में हुई थी लेकिन सन् 1954 से यह लाइब्रेरी नई दिल्ली में आईटीओ के पास दीन दयाल उपाध्याय मार्ग पर स्थित है। वैसे तो दिल्ली में पुस्तकालयों की कमी नहीं है लेकिन बहुत कम ऐसी हैं जो निम्न वर्ग के लिए भी उपयोगी हैं। यही विशेषता इस लाइब्रेरी को अन्य से अलग बनाती है। यह एक पब्लिक लाइब्रेरी है और इसका संचालन दयाल सिंह लाइब्रेरी ट्रस्ट सोसाइटी द्वारा होता है। यहाँ के लाइब्रेरियन का कहना है, ''यहाँ ऐसे छात्र भी आते हैं जिनके पास लिखने के लिए एक पेपर भी नहीं होता। इस लाइब्रेरी में बच्चों से लेकर रिटायर्ड लोग तक, सभी आते हैं। 300 रुपए सिक्योरिटी जमा करवा कर मेम्बरशिप कार्ड बनवाया जा सकता है। यह सिक्योरिटी रिफंडेबल है।''

लाइब्रेरी में लगभग 40 हजार पुस्तकें हैं जिनमें मुख्यत: अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू व पंजाबी भाषाओं में उपलब्ध हैं। सबसे अच्छा संग्रह अंग्रेजी पुस्तकों का है। यहाँ प्रवेश परीक्षाओं, साहित्य, तकनीक, फिलॉसफी, साइकोलॉजी, मैनेजमेंट की पुस्तकों के साथ-साथ रिसर्च के लिए दुर्लभ पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। यहाँ की सबसे पुरानी पुस्तक सन् 1787 की है जो कहीं और मिल पाना मुश्किल है। कई छात्र यहाँ रोजाना पढ़ने के लिए आते हैं। इन्हीं में से एक का कहना है कि उन्हें यहाँ से पढ़ने के लिए काफी सामग्री मिल जाती है। एक रिटायर्ड प्रिंसिपल हैं जो यहाँ के लगभग नियमित सदस्य हैं। वे खाली समय में अपनी रुचि की किताबें यहाँ पढ़ते हैं। यह लाइब्रेरी रिसर्च वर्क, खासतौर से इतिहास के लिए बहुत सहायक है। इस लाइब्रेरी के आज लगभग 9 हजार सदस्य हैं और औसतन 100 लोग यहाँ रोजाना आते हैं। पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए यहाँ बड़े रीडिंग हॉल के अलावा एक छोटा स्टडी रूम भी है जहाँ लोग अपनी व्यक्तिगत पुस्तकें भी पढ़ सकते हैं। इस लाइब्रेरी का एक अहम हिस्सा है बेहद खूबसूरत चिल्ड्रेन रूम जहाँ 5 से 15 साल के बच्चे न सिर्फ किताबें पढ़ सकते हैं बल्कि डॉक्यूमेंट्री फिल्में भी देख सकते है। आईटीओ स्थित कई स्कूलों के बच्चे स्कूल के बाद यहाँ आकर अपना समय बिताना पसन्द करते हैं।

यहाँ बच्चों में प्रतियोगिताएँ भी करवाई जाती हैं ताकि बच्चे उत्साह से ज्ञान प्राप्त कर सकें।

डॉ० शुकदेव सिंह की पुस्तक '**भोजपुरी और हिन्दी**' से...

'भोजपुरी जिन्दगी' खण्ड से : *ब्रत/उपवास के खिस्सा-कहिनी*

सीतला मईआ

राजा रहलन, आ रानी। राजा का सातगो लइकी। लइका ना रहला से गद्दी के के देसु। लइकिन के सयान भइला पर बिआह-सादी का फिकिरे से दुबरा गइलन। रानी के अठई बेर गोड़ भारी भईल। का जाने हमरा बुढ़वती पर रामजी के दया होखे। राजा रानी के समझा दिहलन कि खाइल-पहिरल, नीक लइकन क खियाल करिहन जेवना से लइका होखेत ओकर कुल्हि गुन नीक। कि जइसन महतारी, ओइसने लइका होला।

रानी राजा से कहली कि हमार मन जाउरि खाये के करत बा। लइकिन से बाँचे तब न किछु कइलऽ, खाइल जाय। राजा कहलन की रानी एगो काम कर। मनमें जाउरि खाये क बात पूरा कइल जरूरी बा। अइसन कर कि राति क जब लइकी खा के सुति जाँसु स, त तूँ जाउरि बना के खा लऽ। तोहार मनसा आ ललसा पूरा हो जाई। रानी के बाति जँचि गइल। ऊ जाउरि बनावेक तैयारी करे लगलीं। छोटकी लइकी लुका के सुनि लिहले रहे। माई के ई बात बहिनिन के बता दिहलसि। सनमत होके कवनो कलछुलि लेके सुतलि, कवनो तसली लेके सुतलि, कवनो आगि जरावे के इन्हन लेके सुतलि। रानी जागि के सर-समान ठीक करे चुहानी गइलीं। चूल्हा बारे खातिर इन्हन जरावे के खोजऽ त मिलबे ना करे, भुनभुनइली— ना जाने इन्हन का हो गइल। हे माई हम लेले बानी। छोटी उठि के बइठि गइलि। 'चुप-चाप बइठु।' रानी छोटकी लइकी के फुसलवली। आगि बरली। तसली धरे के पारी आइल त मिलबे ना करे। बहुत खोजली।

'हम ले ले बानी ए माई, देईं?' अउरी लइकी उठि के बइठि गइली सँऽ।

चाउर, चीनी, दुध तसला में डालि दिहलीं। थोरे देर में चलावे के जरूरति परलि। कोना-कोना खोजली कलछुल कहीं ना मिललि। छोटकी लइकी से पुछली—'ए बाची कलछुल कहाँ बा।'

'हम लेले बानी रे माई!' कहि के सुतल लइकी उठि के बइठि गइली। जवन रानी ना चाहत रहलीं तवने भइल। अब का करसु। बाकिर मन में ठानि लिहली कि एह लइकिन से कवनो तरे पाछ छोड़ावे के उपाय सोचे के परी। जाउरि तइयार हो गइलि। रानी पानी लिआवे गइलीं एहर छोटकी लइकी कुछ इकड़ा चुनि के जाउरि में डालि दिहलसि। रानी, राजा के बोलवली। ऊपर-ऊपरक जाउरि कुल्हि लइकिन के परोसली। फेनु राजा के परोस के ढाँपि के ध दिहलीं कि नीचे क बॅचल नीकको जाउरि बाद में खाइब। सब खा-पी के चलि गइल, त रानी खाये बइठली। जब तसली मेंसे जाउरि उझिलसु त खड़-खड़ात इंकड़ा गिरि परलन सँ। केहू तरे बीछि-बरा के खा-पी के छुट्टी कइली। राजा से जाके कुल विपति कहि घललली। राजा बड़ा खिनसइलन कि ई बेटी ना, हमनी के खाये-पीये, भा रहे में कबाहटि बाड़ी स। इन्हन के ले जा के जंगल में छोड़ि आईं।

सबेरे राजा कुल्हि लइकिन के बोलवलन आ कहलन कि ए बाची लोग। एहिजा ले थोरकी दूर पर एगो जंगल बा, जवना में रंग-बिरंग क फल-फूल त बटले बाटे मकोइ आ बइरि खूब फरलि बा। आजु चलतू जा, त तोहनी लोग के घूमा ले अइतीं। कुल्हि खुसी मन से तइयार हो गइली सँ। राजा उन्हन के ले के चललन। बहुत दूर गइला पर एगो घोर जंगल मिलल। ओह में बइरि आ मकोइ अफरात फरलि रहे। राजा कहलन कि हम थाकि गइल बानी। ए बेटी लोग! तोहनी लोग जा जा खूब मन भर बइर आ मकोइ खा जा। जब चले के होई त हम आपन पगरी एह पेड़ पर चढ़ि के हावा में उड़ाइबि। पगरी के उड़ति देखि के तोहन लोग चलि अइह जा, त हमनी का घरे चले के। कुल्हि बेटी ठीक बा कहि के जंगल में चलि गइली सँ आ बइर, मकोइ तूरि-तूरि खाये लगनी सँ।

एहर राजा जसहीं सातो बहिन जंगल में गइली सँ आपन पगरी बइरि का ऊपर टाँगि के घर मुँहे हो गइलन। ओहर सातो बहिन खूब भरपेट बइरि आ मकोइ खाइल लोग। अब लवटे के तेयार भइली सँ आ घूमि के देखली स त राजा क पगरी हवा में उड़ति रह। सभ दउरली सँ। पँजरा आके देखलीस त एगो फेड़ का ऊपर पगरी उड़ति रह आ राजा क कहीं पता नइखे। बहिन लोग रोवत-धोवत एहर-ओहर बहुत खोजल बाकिर न राजा कत्तो मिलल न ओह जंगल में बहरा निकले क न कवनों रहता लउकल। सुरुज पच्छिम ओर पर धीमे-धीमे बढ़त-बढ़त अलोप हो गइलन। अन्हार धरती पर उतरे लागल, सातो बहिन एगो फेड़ पर सूति रहल। ओह जंगल में ऊ लोग रहे लागल आ बइरि-मकोइ खा-खा के दिन बितावे लागल। घरे ऊ लोग सीतला क पूजा देखले रहे। एही तरे एक दिन लोग सोचल कि हमनों का सीतला माई क पूजा करीं जा। सभ जानी माटी लिआइल लोग, बाकिर पानी कत्तों रहवे ना करे। अब कइसे चउर बनो। सातो जानी सीतला माई क भगती में रोवे लागल, आ विनती करे लागल लोग कि हे माता! हमनी क भगती साँच होखे त पानी निकलि जा। बे छल-कपट के पुकार पर भला पानी कइसे रुको। ओहिजे पानी क धारफूटि गइलि। लोग माटी सानि के सीतला माई क चउरि बनावल। माटी क गदहा बनावल। लइकिन क मन में फेनु एगो बाति उठलि कि ई गदहा साँचो के हो जासु स। कुल्हि रोवे लगली स आ थोरकी देर में ऊ कुल्हि माटी क गदहा साँचो क हो गइलन स। ओ गदहन के देखि के सातो बहिन बड़ा खुस भइली। पूजा-पाठि जइसे देखले रहली ओइसे कइली स आ गदहा पर चढ़ि के लोग गाँव का ओर चलल। ऊ नगर एगो राजा क रजधानी रहे। उहाँ राजा आ एगो भाट का घरे बड़ा जोर से माता निकलन रहलीं। दूनो जाना क लड़िका बेराम रहलें सं। जा के लोग एगो इनार पर चोंहपल। ऊ लोग कमकरिन से राजा कीहें जोह भेजवावल कि सात गो तोहार मउसी आइल बाड़ीं। कमकरिन जा के राजा से कहलसि। राजा पुछलन कि ढेर लाव-लसकर बा? ए पर कमकरिन मुँह बिचुका के कहलसि कि सातो जानी लोग गदहा पर चढ़ल बा। ई सुनि के राजा खिसिन बुत हो गइलन आ जनलन कि ई रिगावति ह। त ऊ सिपाहिन के हुकुम दिहलन कि जा के गरम तेल कराहा में से एक-एक परात ओ लोग का देहि पर फेकि द स। ऊ लोग मजा चखो। सिपाही गइलन सं तेल लेके फेंक दिहलन स। सातो बहिन मुरछा के कुइयाँ का जगत पर गिर परली जा। ओही बेरी भाट क मेहरारू, पानी भरे आइलि। पानी बिना छटपिटात देखि के ऊ चिरुआ भर पानी लोग का मुँह में डालि दिहलसि। सातो बहिन के बड़ा सुख मिलल। ऊ कहली जा कि अउरी पानी पिया दे। भाटिन एक गगरी पानी पिआ दिहलसि। सातो बहिन जुड़ा के असीरबाद दिहली जा—'ए बहिनी! तोहार बेटा नीक हो जा।' भाटिन अचरज से देखे लागलि। ओकरा लइका क बेरामी क हालि ए लोग के कइसे मालूम भइलि ह। हो न हो ई जरूर कवनो देवी ह लोग। ऊ गगरी के खप्पर बना के लोग पर पानी छिरके लागलि। सातो बहिन खूब जुड़इली। ओहर ओकर लइका नीक होके खाये के मँगलस।....

विस्तृत अध्ययन हेतु पढ़ें—

भोजपुरी और हिन्दी

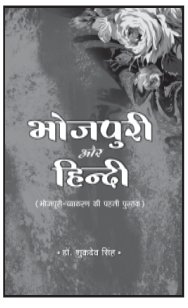

(भोजपुरी व्याकरण की पहली पुस्तक)

डॉ० शुकदेव सिंह

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

मूल्य : सजि. रु० 275.00, अजिल्द रु० 175.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

हिन्दी को भी चाहिए एक जामवंत

—पंकज श्रीवास्तव

अजब हंगामा बरपा है। समाजवादी पार्टी के घोषणापत्र में अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाने की बात क्या कही गई, तूफान मच गया। उन अंग्रेजी अखबारों को तो छोड़िए, जिन्होंने 1857 के संग्राम का खुलेआम विरोध किया था या जिसने भारत की आजादी की खबर इस अंदाज में छापी थी, जैसे कोई अनहोनी हो गई, हिन्दी मीडिया का भी एक तबका छाती पीट रहा है। ऐसा लगता है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म करना गैरकानूनी बात हो या पहली बार कही जा रही हो। दिमागी गुलामी का इससे बदतर उदाहरण मिलना मुश्किल है।

अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाना दरअसल संविधान का संकल्प है। आजादी के आन्दोलन के दौरान हिन्दी को अखिल भारतीय सम्पर्क भाषा और राजकाज की भाषा बनाने का सपना इसलिए देखा गया था, क्योंकि गुलामी सिर्फ भौगोलिक और शारीरिक नहीं होती, सांस्कृतिक भी होती है। आजाद भारत में हिन्दी इसी सांस्कृतिक आजादी की अभिव्यक्ति के लिए चुनी गई थी। ध्यान देने वाली बात यह है कि यह हिन्दी पहले से मौजूद नहीं थी, बल्कि लगातार बनाई जा रही थी। हिन्दी क्षेत्र में भी मातृभाषा तो अवधी, भोजपुरी, मगही, बघेली, बुंदेली जैसी बोलियाँ थीं, जिन्हें पीछे छोड़ हिन्दी की प्रतिष्ठा की जानी थी। इसीलिए आजादी के बाद महात्मा गाँधी ने बीबीसी के संवाददाताओं से अँग्रेजी में बात करने से इनकार करते हुए कहा था, ''दुनिया से कह दो, गाँधी को अंग्रेजी नहीं आती।''

जाहिर है, आज जो तबका अंग्रेजी की ओर उंगली उठने पर बौखला रहा है, वह बेहद शातिर है। उसने बड़ी चालाकी से अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाने के वाक्य से 'अनिवार्यता' शब्द गायब कर दिया और बताने लगा कि अंग्रेजी हटाने की बात करना 21वीं सदी में मूर्खता है। इससे देश पीछे चला जाएगा या फिर मुलायम के अपने बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में क्यों पढ़े, वगैरह-वगैरह।

ये सारे तर्क मुद्दे से ध्यान हटाने के लिए हैं। बात सिर्फ इतनी है कि करीब 50 करोड़ हिन्दीभाषी, अंग्रेजी न जानने के बावजूद कैसे तरक्की कर सकें। कैसे डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर बन सकें। जिन्हें अंग्रेजी पढ़नी हो, पढ़ें पर जिन्हें अंग्रेजी न आती हो, उन्हें खामियाजा न भुगतना पड़े। आखिर रूस, चीन, जर्मनी, जापान, फ्रांस, स्पेन जैसे देश बिना अंग्रेजी के तरक्की कर सकते हैं, तो फिर हिन्दी वाले क्यों नहीं? और यह हक हिन्दी ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं को मिलना चाहिए। वैसे भी, सिर्फ अंग्रेजी जानना ही विकास की गारण्टी होती, तो अमेरिका में लाखों लोग खुले आसमान के नीचे जिन्दगी गुजारने को मजबूर नहीं होते। इक्कीसवीं सदी का एक चेहरा यह भी है कि अंग्रेजी जिस आर्थिक व्यवस्था के केन्द्र में थी, वह दिवालिया हो गई और जिस आउटसोर्सिंग का फायदा उठाने के लिए अंग्रेजी जानना जरूरी माना जाता था, उसे बन्द करने के लिए अमेरिका में जुलूस निकल रहे हैं।

दरअसल, दिमागी गुलामी को स्वर्ग का सुख मान रहे वर्ग की चिंता यह है कि **अंग्रेजी की अनिवार्यता हटते ही आम लोग तेजी से कुलीनतंत्र के शामियाने में घुसने की कोशिश करेंगे। तब आम और खास का फर्क ही मिट जाएगा। शासक वर्ग भी इस फर्क को बनाए रखना चाहता है।** उसकी चिंता देश के दो-चार करोड़ अंग्रेजी जानने वालों को लेकर रहती है। आग और पहिए के बाद भाषा मनुष्य का सबसे बड़ा आविष्कार है। और दुनिया भर के शिक्षाशास्त्री बताते हैं कि मातृभाषा में शिक्षा से ही मेधा निखरती है। मौलिक अभिव्यक्तियाँ मातृभाषा में ही सम्भव होती हैं। जनतंत्र का तकाजा यह है कि जनता और शासन की भाषा एक हो, पर हिन्दी समाज में मुंसिफ और मुल्जिम, मुवक्किल और वकील, डॉक्टर और मरीज, अफसर और क्लर्क की भाषा अलग है। अंग्रेजी में निष्णात होने के प्रयास में हिन्दी वाला पैर में पत्थर बाँधकर दौड़ता है और अक्सर पिछड़ जाता है। ऐसे में जरूरत नए महाप्रयास की है। यह सही है कि ज्ञान-विज्ञान के तमाम क्षेत्रों में हिन्दी में किताबें उपलब्ध नहीं हैं। पर अगर ठान लिया जाए तो पाँच साल में दुनिया का सारा ज्ञान हिन्दी में उपलब्ध हो सकता है। वैसे भी, आईआईटी, कानपुर के वैज्ञानिक ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित करने के करीब पहुँच गए हैं, जो बटन दबाते ही सटीक अनुवाद पेश करेग। यानी तकनीक भी काम आसान कर रही है। जरूरत है इरादे की।

कवि त्रिलोचन अक्सर कहते थे कि हिन्दी वालों मे अपनी भाषा को लेकर अनुराग नहीं है। बात सही है। अनुराग होता, तो सपा के घोषणापत्र पर, अंग्रेजी की बातपर न कांग्रेस आलोचना करने का दुस्साहस करती, न बीजेपी। लेकिन उन्हें पता है कि हिन्दी के नाम पर वोट नहीं पड़ते, वे जाति और धर्म के नाम पर पड़ते हैं। अत: आज हिन्दी को जामवंत की जरूरत है, जो हिन्दी वालों को उनकी ताकत का एहसास करा सके।

—'अमर उजाला' से साभार

अत्र-तत्र-सर्वत्र

सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकें

इंग्लैण्ड। विश्व साहित्य की प्रख्यात कृतियों में ब्रिटिश लेखक जार्ज आरवेल के उपन्यास '1984', रूसी लेखक लियो ताल्स्ताय की 'युद्ध और शांति' (वार एंड पीस) और आयरिश लेखक जेम्स जॉयस की 'यूलीसिस' और फिर बाइबिल इंग्लैण्ड-भर में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकें हैं। यह बात एक सर्वेक्षण से सामने आई है कि 65 प्रतिशत लोगों ने इन किताबों को पढ़ने का दावा किया है।

अमेरिकी विश्वविद्यालय में गीता

न्यूजर्सी। अमेरिका की सेटन हॉल यूनिवर्सिटी में सभी छात्रों के लिए गीता पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया है। इस विश्वविद्यालय का मानना है कि छात्रों को सामाजिक सरोकारों से रूबरू कराने के लिए गीता से बेहतर कोई और माध्यम नहीं हो सकता है। सन् 1856 में न्यूजर्सी में स्थापित इस स्वायत्त कैथलिक यूनिवर्सिटी में 10,800 छात्र हैं, जिनमें से एक-तिहाई से ज्यादा गैर-ईसाई हैं।

कम्प्यूटर युग में घटा किताबों के प्रति रुझान

वाराणसी। गायत्री ज्ञानपीठ व गायत्री शक्तिपीठ की ओर से विचार क्रान्ति अभियान के तहत विगत दिनों दस दिवसीय पुस्तक मेले का शुभारम्भ हुआ। इस मेले में विभिन्न विषयों की पुस्तकों में लोगों ने विशेष रुचि दिखायी। वेद, पुराण, उपनिषद और धर्म-दर्शन जैसे गूढ़ विषयों पर पुस्तकें तो थी हीं इसके अलावा स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्राम्य प्रबंधन, समाज निर्माण, ज्योतिष, व्यक्तित्व निर्माण, बच्चों के लिए कहानियाँ, सामाजिक समस्याओं और जीवन-चरित्र वाली पुस्तकें लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहीं। पुस्तक मेले का विधिवत शुभारम्भ काशी सुमेरु पीठाधीश्वर स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वती जी मराहाज और सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० वी० कुटुम्ब शास्त्री ने किया। इस मौके पर स्वामी नरेन्द्रानंद जी ने कहा कि कम्प्यूटर के युग में लोगों ने पढ़ना छोड़ दिया है। स्वाध्याय में कमी आई है।

स्वाध्याय की लुप्त होती प्रणाली मनुष्य के लिए घातक है। स्वाध्याय से वृत्ति बदलती है। वृत्ति से दृष्टि बदलेगी। दृष्टि बदलने से ही रामराज्य की स्थापना होगी और सभी सामाजिक समस्याएँ दूर होंगी। कुलपति प्रो० कुटुम्ब शास्त्री ने कहा कि इस पुस्तक मेले की विविधता प्रशंसनीय है।

हिन्दी विश्व की सरलतम भाषाओं में है। **—आचार्य क्षितिमोहन सेन**

अरे, ओ यायावर! रहेगा याद.....

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का जन्मदिन (9 अप्रैल) व पुण्यतिथि (14 अप्रैल) दोनों बीत गई लेकिन इस यायावर को 'काशी' ने याद नहीं किया। महापण्डित का इस शहर से गहरा रिश्ता रहा है। साहित्यकार व साहित्यिक संस्थाएँ इसे भलीभाँति जानती भी हैं लेकिन हर काम अपने ढंग से निभानेवालों द्वारा इस विभूति को बिसरा देना खटक रहा है।

'सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां, जिंदगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहां' जैसे शेर ने राहुल सांकृत्यायन को यायावरी की प्रेरणा दी। राहुल सांकृत्यायन का जन्म आजमगढ़ जिले के पंदहा गाँव स्थित अपने ननिहाल में वर्ष 1893 में हुआ था। तब मूल नाम दिया गया केदारनाथ पाण्डेय। वह पहले वेदपाठी ब्राह्मण थे। फिर आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। कालांतर में बौद्ध भिक्षु हो गए। तभी अपना नाम बदलकर राहुल सांकृत्यायन रख लिया। राहुल विचारों से क्रान्तिकारी थे लेकिन महात्मा गांधी से काफी प्रभावित रहे। बताते हैं कि घुमक्कड़ी का प्रारम्भ 14 साल की आयु में 1907 में हुआ। घर से निकलने के बाद वह अक्सर बाबा परमहंस कुटी उमरपुर जाया करते थे। कुछ समय तक पण्डित महादेव पाण्डेय के सम्पर्क में रहकर संस्कृत का अध्ययन किया। इसके बाद वह वाराणसी आ गए। यहाँ के एक मठ में वक्त गुजारते हुए उन्होंने संस्कृत से शास्त्री की परीक्षा पास की। पालि ग्रन्थों पर त्रिपिटकाचार्य की उपाधि प्राप्त की।

काशी में पण्डितों से शास्त्रार्थ कर उन्होंने महापण्डित की उपाधि हासिल की। घर छोड़ने के बाद पर्यटन और अध्ययन के पश्चात आधी उम्र बीतने पर उनका सांसारिक विषय से पुनर्स्पर्श हुआ। उन्होंने रूसी महिला रोला से रूस में विवाह किया। इससे एक सन्तान पैदा हुई इगोर। वह तब मास्को विश्वविद्यालय में पालि विभाग के अध्यक्ष थे। उसी समय उन्होंने वोल्गा से गंगा, जपनिया राक्षस आदि ग्रन्थ लिखे। पहले विश्वयुद्ध के समय उन्होंने छपरा पटना आदि का दौरा किया। अपनी तीसरी यात्रा में उन्होंने तिब्बत से प्रमाण वार्तिकम तथा वादायन न्याय की खोज की। इसके पश्चात वह संसार के विद्वानों के सामने आए। लगभग 50 साल की उम्र में उन्होंने भारतीय महिला कमला से फिर विवाह किया। इससे दो संतानें हुईं।

मार्क्स और बुद्ध के विचारों से खास तौर पर प्रभावित रहे राहुल के महत्त्वपूर्ण कार्यों में शासन शब्दकोश, राष्ट्रभाषा प्रचार, पालि ग्रन्थों की खोज, बुद्ध वर्णन का अध्ययन, हिन्दी काव्य इतिहास में सिंह सामंत काल का निर्माण आदि हैं। पालि भाषा के मान्य विद्वानों में इनका सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

लंका में जब वह दर्शन के प्रोफेसर थे, उस समय एक विद्वान ने कहा था कि उन्होंने राहुल सांकृत्यायन को ग्रन्थ पढ़ते कभी नहीं देखा। शायद उनका मस्तिष्क ही दर्शनमय है। इस प्रवास के दौरान वह साम्यवाद से अधिक प्रभावित हुए। राहुलजी का चिंतन आगे और उड़ान भरता गया।

बहरहाल, स्वतंत्र भारत में सांकृत्यायन को आदर नहीं मिला। उनके विचार सत्ता प्रतिष्ठान के गले नहीं उतरते। जीवन के आखिरी पड़ाव में उन्हें फिर लंका जाना पड़ा। मानसिक बेचैनी उन पर हावी रही। वर्षों वह संज्ञान शून्यता की स्थिति में रहे। घुमक्कड़ी पर आधारित उनकी कृतियाँ काफी लोकप्रिय हुईं। खासकर मेरी लद्दाख यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा आदि।

इस महापुरुष को काशी ने याद नहीं किया जिसने कभी महापंडित की उपाधि दी। कहा जा सकता है कि चुनावी भागदौड़ में स्मृति लोप की स्थितियाँ पैदा हो गई होंगी लेकिन बाकी चीजें तो याद रही न.....।

स्मृति-शेष

योगराज थानी का निधन

नई दिल्ली। सुप्रसिद्ध पत्रकार-लेखक **योगराज थानी** का 76 वर्ष की आयु में 5 मार्च को निधन हो गया। वह टाइम्स ऑफ इण्डिया की पत्र-पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे और बाल-साहित्य एवं खेल-साहित्य पर प्रचुर लेखन कार्य किया।

कवि नईम नहीं रहे

हिन्दी नवगीत के सशक्त हस्ताक्षर कवि **नईम** नहीं रहे। मध्य प्रदेश के देवास क्षेत्र के शासकीय कॉलेज में हिन्दी अध्यापन करते हुए गीतकार नईम की रचनाएँ 'नवगीत दशक-1' (सं० डॉ० शंभूनाथ सिंह) से लेकर 'पथराई आँखें', 'बातों ही बातों में' आदि में संकलित हैं। उनके गीतों में जीवन की गहन संवेदना का स्पर्श है—

'वनों को निर्वृक्ष होते देखना/कितना कठिन है
देखना निष्प्राण होते मनों को/कितना कठिन है।'

आगामी प्रकाशन

एक दलित लड़की की कथा

'एक दलित लड़की की कथा' वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकार बच्चन सिंह की पाँच लम्बी कहानियों का संकलन है। ये कहानियाँ आम आदमी के जीवन के विभिन्न पक्षों को बहुत गहराई तक जाकर स्पर्श करती हैं और दलित-विमर्श को नई ऊँचाई देती हैं। ये विकृत राजनीति के मर्म तक पहुँचने की कोशिश भी करती हैं। बच्चन सिंह का लम्बा जीवन सक्रिय पत्रकारिता में गुजरा है इसलिए उन्हें समाज के भीतरी तहों को उकेरने का अवसर भी काफी मिला है और उसमें छिपी सच्चाई को टटोलने का मौका भी हाथ लगा है। उन्होंने जीवन के यथार्थ को काफी करीब से देखा है। वह यथार्थ इन कहानियों में पग-पग पर देखने को मिलता है। ये कहानियाँ जीवन और समाज के अनछुए पहलुओं को छूती हैं और पाठक को भरपूर मनोरंजन तो देती ही हैं, निजी और सामाजिक यथार्थ से रूबरू भी कराती हैं। इनमें स्त्री की दृढ़ता है, संकल्प है और आकाश को छूने की उत्कट अभिलाषा भी है। लेखक ने यह अभिलाषा पूरी होते दिखाया है। यह स्त्री खासतौर पर दलित स्त्री के प्रति उसके सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचायक है।

हिन्दी कहानी में लोकतंत्र

सारी विकृतियों, विसंगतियों के बावजूद जनतंत्र आज के मनुष्य का परम काम्य है तो इसलिए कि एक प्रणाली के रूप में जनतंत्र की जितनी भी विफलताएँ गिना लें, लेकिन जनतांत्रिक मूल्य—स्वतंत्रता, समता एवं बंधुत्व की अवहेलना हम नहीं कर सकते। शासन प्रणाली के रूप में तो जनतंत्र अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में पनपा, लेकिन जीवन मूल्य की दृष्टि से देखें तो ये मूल्य मनुष्य की बुनियादी जरूरत हमेशा से रहे हैं और रहेंगे। इसीलिए जब से सभ्यता का विकास हुआ तभी से मनुष्य इन मूल्यों के लिए संघर्षरत है।

साहित्य मनुष्य का सर्वोत्तम स्वप्न है। जीवन में जिन मूल्यों को हासिल करने में वह विफल रहता है, उसके लिए भी साहित्य में संघर्षरत रहता है, भावी मनुष्य के लिए स्वप्न का सृजन करता रहता है। जनतंत्र और साहित्य के उन्हीं बुनियादी मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में इस पुस्तक में आधुनिक जनतंत्र के विकास के साथ-साथ जनतंत्र की भारतीय परम्परा की भी तलाश विस्तार से की गई है। जनतांत्रिक मूल्यों को साहित्य का बुनियादी मूल्य मानते हुए हिन्दी कहानी के प्रारम्भ से लेकर समकालीन कहानियों तक में जनतांत्रिक मूल्यों के अभिव्यक्त स्वरूप, शैली एवं भाषा का बारीक अध्ययन किया गया है। कुल मिलाकर शासन प्रणाली के रूप में अब तक का 'सर्वोत्तम स्वप्न' हिन्दी कहानी में अपनी समस्त विसंगतियों के साथ कैसे सृजित है, इसका गहन एवं रोचक आख्यान है यह पुस्तक।

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/ गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

तीन हजार वर्ग फुट में स्थापित पुस्तकों का विशाल शोरूम तथा
इंटरनेट की वैश्विक दुनिया में स्थापित विशाल वर्चुअल शोरूम

http://www. vvpbooks.com *(With Online Shopping facility by Credit Card also)*

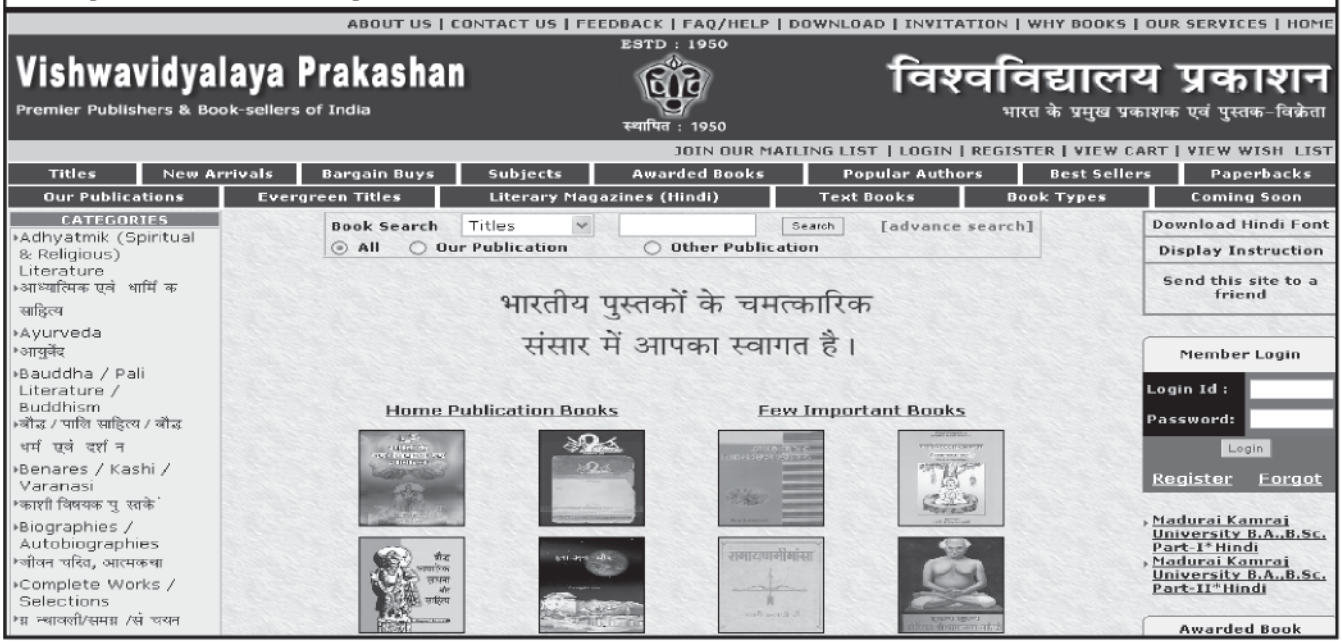

(Website is being updated regularly)

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

साहित्य, भाषा-विज्ञान, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि। अध्यात्म, योग, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, मनीषी-संत-महात्मा जीवनचरित, धर्म एवं दर्शन, भारत विद्या, इतिहास, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व, अभिलेख, मुद्राएँ, संग्रहालय विज्ञान, वास्तु कला, जनसंचार, पत्रकारिता, संगीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्धशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान, स्त्री-विमर्श, मनोविज्ञान, भूगोल, भू-विज्ञान, विशुद्ध विज्ञान जैसे—फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलॉजी, बॉटनी, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साइंस आदि। मानविकी, समाज विज्ञान और कुछ विशेष विषयों के अन्तर्गत लगभग सभी विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान की ओर सतत प्रयासरत।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी-221001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु सुविधानुसार पधारें, लिखें, फोन/फैक्स करें, ई-मेल करें अथवा वेबसाइट का अवलोकन कर ऑनलाइन पुस्तकों का आदेश करें।

पोथी ही न पढ़ाएँ, जीवन मूल्य सिखाएँ

—डॉ० श्रीनिवास

पुरानी कहावत है—पढ़ोगे-लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे होगे खराब। लेकिन इस कलयुग में जो लोग पढ़ने से कोई नाता नहीं रखते, नाममात्र को ही साक्षर होते हैं, वही विद्वानों की छाती पर बैठकर पहलवानी राज करते हैं। खेल के मैदान में कलाबाजी करतब दिखलाने वाले करोड़पति नहीं, अरबपति कुबेर बन बैठते हैं और इसके साथ ही इतने मगरूर हो जाते हैं कि राष्ट्रीय सम्मान को कबूलने की फुर्सत अपनी धनकमाऊ दिनचर्या से निकाल पाना नाजायज और नामुमकिन समझने लगते हैं। महेन्द्र सिंह धोनी और हरभजन सिंह 'भज्जी' की बदतमीजी को न तो अनदेखा किया जा सकता है और न ही माफ किया जाना चाहिए। जो बात इस अभद्र और कृतघ्न खिलाड़ियों पर लागू होती है, वह फिल्मी सितारों और फैशनपरस्त दूसरे उन सभी लोगों के बारे में सटीक बैठती है, जो हमारे सार्वजनिक जीवन में प्रभावशाली नजर आते हैं।

स्पष्ट है कि स्कूल की पढ़ाई जिस किसी कक्षा तक भी इन भाग्यशालियों ने प्राप्त की, उसके दौरान कोई सार्थक सामाजिक मूल्य इन्होंने गाँठ नहीं बाँधे। इनकी शिक्षा-दीक्षा दूसरों के लिए जानलेवा संकट पैदा करने वाली ही सिद्ध हो रही है। इकदिनिया मुनाफाखोर क्रिकेट को राष्ट्रीय सम्मान के साथ जोड़ने वाली और आम चुनाव से ज्यादा अहम घटना समझने वाली मानसिकता को देश तोड़ने वाले साम्प्रदायिक जहर से या देश को गृहयुद्ध की कगार तक पहुँचाने वाले जातीय वैमनस्य से कम जोखिम भरा नहीं समझा जा सकता। **राष्ट्र के सीमित संसाधन, जिन्हें गरीब आम आदमी की रोजमर्रा की जिन्दगी के दुख:तकलीफ को कम करने के लिए जगाया जाना चाहिए, खेल तमाशों में ही बेहद फिजूलखर्ची से नष्ट कर दिये जाते हैं।** खुदगर्ज और कुनबापरस्त खिलाड़ियों और फिल्मी सितारों को ही यह अभागा देश नायक समझता है। जिन्दगी के दूसरे क्षेत्रों में खून-पसीना एक कर हाड़ गला कर कुछ हासिल करने वाले मेहनत मजदूरी करने वालों को या पढ़े-लिखों को इस मायाजाल में फँसे नादान निरन्तर नजरन्दाज करते हैं। डॉक्टर हो या इंजीनियर या दूसरा कोई वैचारिक या कुशल पेशेवर, आज के हिन्दुस्तान में यह उम्मीद नहीं कर सकता कि उसकी पढ़ाई-लिखाई जालिमों-जाहिलों की शानो-शौकत वाली जिन्दगी की दहलीज तक भी उन्हें पहुँचा सकती है। इक्का-दुक्का सितारे की नाटकीय सफलता करोड़ों को पथ भ्रष्ट करती है। पढ़ाई से विमुख करती है और इस मरीचिका में फँसा देती है कि उनके भाग से भी छींका फूट सकता है और वह भी रातों-रात करोड़पति बन सकते हैं। अपने देश में पढ़ाई-लिखाई का सबसे अधिक अवमूल्यन खेलों को अनावश्यक तूल देने से हुआ है। बड़े-बड़े उद्योगपति नाम कमाने के लिए खुले हाथ से सफल खिलाड़ियों को प्रायोजित करते हैं। इसका रत्ती भर हिस्सा भी कहीं उदारता के रूप में नहीं झलकता, जिसका लक्ष्य विकास कार्यों का समर्थन देने वाला हो सकता है। कन्या शिशु के समुचित पालन-पोषण का प्रबन्ध हो या निर्धन प्रतिभाशाली छात्रों के लिए छात्रवृत्तियाँ, इनकी तरफ कम ही लोगों का ध्यान जाता है। इस जानकारी का भी अभाव ही है कि स्वयं बेशुमार अमीर बन चुके खिलाड़ियों या फिल्मी सितारों ने साधनहीन लाचारों-बीमारों की व्यथा कम करने के लिए कर बचाने के रास्ते से ही कितना दान पुण्य किया है। सभी का जोर अपनी चार दिन की चाँदनी वाली लोकप्रियता भुनाने पर रहता है। सरकार ईनाम में मिली महँगी कार पर कर माफ कर दे और नातेदार रिश्तेदार को चुनाव के वक्त टिकट दे दे। जसपाल राणा से लेकर महेन्द्र सिंह धोनी तक यही परम्परा देखने को मिल रही है। यह न पूछो तुम देश के लिए क्या कर सकते हो, देश का फर्ज है कि यह सभी कर्ज माफ करे और अपना एहसानमंद माथा झुकाये खड़ा रहे।

दूसरे छोर पर वे बेचारे हैं जो अब तक इस छलावे में फँसे हैं कि पेट काटकर पढ़ाने से उनके बच्चों का नसीब सुधरेगा। इनमें से अधिकांश अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने में असमर्थ हैं। सरकारी स्कूलों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं। खर्चीले अँग्रेजी स्कूल को बन्द करवाने की मंशा अपने चुनावी घोषणापत्र में शामिल करवाने वाले मुलायम सिंह ने भी अपने सपूतों को निजी बेहतरीन अँग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में ही पढ़ाया। इस देश का एक जानलेवा संकट यह भी है कि हमारा शासक वर्ग अंग्रेजीपरस्त और अंग्रेजीयत का मारा हुआ है। शहरों में रहने वाला यह सम्पन्न तबका असली गरीब देहाती भारत को जानता-पहचानता नहीं, अपना समझना तो बहुत दूर की बात है। पढ़ाई-लिखाई का जो पाठ्यक्रम विभिन्न परीक्षाओं के लिए निर्धारित है, वह नाममात्र को ही एक है। **पढ़ाने के तरीके अध्यापकों की क्षमता और स्कूल तथा घर में अनुकूल या प्रतिकूल माहौल के कारण जिन्दगी के खेल में सभी बच्चों के लिए मैदान समतल नहीं।** विडम्बना यह है कि जो जनप्रतिनिधि स्वयं विपन्न शोषित उत्पीड़ित परिवारों से आते हैं, वह भी सत्ता के गलियारों तक पहुँचते ही अपनी लाडली औलाद को सरकारी स्कूलों से तत्काल छुटकारा दिला देते हैं। इसीलिए सरकारी अस्पतालों की तरह सरकारी स्कूलों में कभी सुधार नहीं होता और न होगा। यह स्कूल अपने विद्यार्थियों के लिए एक दूसरी तरह का जान का संकट पैदा कर देते हैं। कहीं अनुशासन और देखरेख के अभाव में बच्चे नशाखोरी की लत के शिकार होते हैं या परपीड़क मनोवृत्ति वाले अध्यापकों के हाथों मारे-पीटे जाने के बाद जान से हाथ धो बैठते हैं। देश की राजधानी में शन्नो नामक बच्ची हाल ही में मर गई, जब अँग्रेजी गिनती या वर्णमाला ठीक से न सुना पाने के कारण अध्यापिका ने उसे लात-घूसों से मारा और घंटों मुर्गा बनाकर धूप में खड़ा रखा। ऐसी दुर्घटना पहली बार नहीं हो रही है। यह भी याद रखने लायक है कि सर्वोच्च न्यायालय ने इस तरह की शारीरिक सजा को बहुत पहले गैरकानूनी करार दिया है।

वैसे यह बात भी गाँठ बाँधने लायक है कि निजी महंगी शिक्षण संस्थाओं में भी विद्यार्थियों की जान निरापद नहीं रहती। कुछ ही दिन पहले अमन नाम का एक होनहार डॉक्टर बनने का सपना सीने में सँजोये ही कुरबान हो गया रैगिंग की वेदी पर। रैगिंग को भी सर्वोच्च न्यायालय गैरकानूनी घोषित कर चुका है। पर इस तरह की अपराधपूर्ण हरकतें बढ़ती ही जा रहीं—खासकर मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में। गाजियाबाद से लेकर चेन्नई तक ऐसे छात्रावासों से मासूम लाशें पढ़ाई की जानलेवा कीमत चुका निकलती रहती हैं। **असली समस्या शिक्षा से मूल्यों का क्षय और नाश है।** *—'हिन्दुस्तान' से साभार*

पाठकों के पत्र

आपने जिस प्रकार से आचार्य रामचंद्र तिवारी का महाजनपंथ दैदीप्यमान किया है, वह सभी को प्रेरणा दे रहा है तथा आपकी गुणग्राहकता को भी सिद्ध कर रहा है। धन्यवाद!

'भारतीय वाङ्मय' ही एक ऐसा बुलेटिन बचा है जो हिन्दी समाज एवं संस्कृति की चुनी हुई खबरें भी देता है। एक बड़े पाठक समूह के लिए यही सूचना का एकल स्रोत है।

तीसरी बात अगर इसके कुछ पृष्ठ बढ़ाकर अपनी क्लासिक या सद्य प्रकाशित पुस्तकों के भी कुछ अंश छाप सकें तो वह ज्यादा सार्थक एवं संग्रहणीय हो जाएगा। पुस्तक प्रसार भी होगा। धन्यवाद! **— रमेश कुन्तल मेघ,** पंचकूला

'भारतीय वाङ्मय' का अप्रैल 2009 का अंक प्राप्त हुआ। अनेक धन्यवाद। 16 पेजी पत्रिका में गागर में सागर भरने जैसा कौशल दिखाया गया है। विभिन्न साहित्य सम्बन्धी समाचारों, समीक्षाओं ने पत्रिका को अत्यन्त समृद्ध बना दिया है। नये प्रकाशनों की सूचना लाभकारी है। आध्यात्मिक पुस्तकों के प्रकाशन में आपका योगदान अतुलनीय है। **— विनोद नाथ गुप्ता**

संयोजक, साहित्य अध्ययन संस्थान, चन्दौसी

सम्मान-पुरस्कार

डॉ० राजेन्द्र उपाध्याय सम्मानित

हिन्दी रंगमंच दिवस 3 अप्रैल से 13 अप्रैल तक वाराणसी की नाट्य संस्था 'सेतु एवं बाल रंगमंडल' द्वारा ग्यारह-दिवसीय नाट्य-आन्दोलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पहले दिन नगर के कैंटूनमेंट स्थित बंगला नं० 25 में संस्कृति-कर्मियों ने दीप जलाकर, जन-गीत गाते हुए आयोजन का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कुँवरजी अग्रवाल ने कहा कि हिन्दी-क्षेत्र के नवजागरण की शुरुआत इसी स्थान पर अब से 140 वर्ष पहले मंचित किये गये नाटक 'जानकीमंगल' से हुई जिसमें युवा भारतेन्दु ने भी भूमिका की। यही भारतेन्दु हिन्दी-भाषा और साहित्य के माध्यम से हिन्दी-संस्कृति के नवजागरण के अग्रदूत बने। परिचर्चा में डॉ० राजेन्द्र उपाध्याय, प्रो० श्याममोहन अस्थाना, नीलकमल चटर्जी, प्रो० मृदुला सिन्हा आदि ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के आरम्भ में संस्था के संयोजक-सचिव श्री सलीम राजा ने इस अवसर पर संस्था के प्रतिष्ठा-सम्मान 'लाइफ-टाइम-एचीवमेन्ट-एवार्ड' हेतु डॉ० राजेन्द्र उपाध्याय के सम्मान-पत्र का वाचन करते हुए, अध्यक्ष के साथ मिलकर शॉल, स्मृति-चिह्न और सम्मान पत्र प्रदान करते हुए डॉ० उपाध्याय को सम्मानित किया।

नाट्यांदोलन के क्रम में 4 अप्रैल को पारसी रंगमंच के शिखर-पुरुष आगाहश्र कश्मीरी की 130वीं जयन्ती पर संस्कृति-कर्मियों ने श्रद्धा-समुन अर्पित किये। आगाहश्र के नाटकों पर परिचर्चा की अध्यक्षता की प्रो० हनीफ अहमद ने। तीसरे दिन 5 अप्रैल को महाकवि जयशंकर प्रसाद के आवास पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिचर्चा का आयोजन किया गया। श्री कुँवरजी अग्रवाल की अध्यक्षता, डॉ० जीतेन्द्रनाथ मिश्र का बीज वक्तव्य और डॉ० राजेन्द्र उपाध्याय के विशेष-वक्तव्य के साथ डॉ० एस०एस० गांगुली को नाट्य मित्र सम्मान दिया गया। आन्दोलन के अगले चरण में नाट्येतिहास चित्र प्रदर्शनी, नाट्य संस्था 'कामायनी' द्वारा 'यह भी सच है', रंग प्रवाह द्वारा 'दी आंट एंड दी ग्रासहोपर' एवं सेतु द्वारा श्री नीलकमल चटर्जी के निर्देशन में 'कायाकल्प' नाटकों की प्रस्तुति की गयी।

निविड़ शिवपुत्र को 'कमलेश्वरी साहित्य सम्मान 2008'

फतुहा की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'जन साहित्य परिषद' के तत्त्वावधान में 'कमलेश्वरी साहित्य सम्मान 2008' का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रतिष्ठित समाजसेवी रेखा मोदी ने की। संचालन डॉ० बालेन्दुशेखर तिवारी ने किया। इस अवसर पर युवा कवि **निविड़ शिवपुत्र** (नोएडा) को उनकी काव्य कृति 'शीर्षक नहीं चाहिए' के लिए 'कमलेश्वरी साहित्य सम्मान 2008' से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप श्री निविड़ को पाँच हजार की राशि, शाल एवं सम्मान-पत्र प्रदान किया गया। इसके अलावा लघुकथा लेखक डॉ० तारिक असलम तस्नीम एवं सिद्धेश्वर व रंगों की दुनिया में तेजी से अपनी पहचान बना रहे युवा चित्रकार संजय राय, रंगकर्मी मनोज कुमार पाण्डेय एवं हिन्दी सेवी अशोक कुमार राय को भी सम्मानित किया गया।

विनय उपाध्याय को अभिनव कला समीक्षा सम्मान

हिन्दी पत्रकारिता के वर्तमान दौर में अपनी लेखनी के द्वारा सांस्कृतिक सरोकारों और कलात्मक अभिव्यक्ति की हिमायत करने वाले **श्री विनय उपाध्याय** (भोपाल) को अभिनव रंगमंडल उज्जैन ने वर्ष 2009 के राष्ट्रीय कला समीक्षा सम्मान से विभूषित किया। लंदन में बसे प्रवासी भारतीय कथाकार श्री तेजेन्द्र शर्मा, ललित निबन्धकार श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, कवि तथा वरिष्ठ आई०पी०एस० श्री पवन जैन ने उज्जैन के विक्रम कीर्ति मन्दिर सभागार में आयोजित एक गरिमामय समारोह में श्री विनय को ग्यारह हजार रुपए की राशि, प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पट्टिका तथा शॉल, श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया।

शकुंतला कालरा सम्मानित

भोपाल में बाल-कल्याण एवं बाल-साहित्य शोध-संस्थान ने **डॉ० शंकुतला कालरा** को बाल-साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु पुरस्कृत किया। समारोह में संस्कृति मन्त्री लक्ष्मीकांत शर्मा तथा पर्यावरण मन्त्री जयंत मलैया उपस्थित थे।

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

भोपाल। मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय पुरस्कार अर्पण समारोह में *उपन्यास के लिए* **मिथिलेश्वर**, *कहानी के लिए* दिवंगत कथाकार **सत्येन कुमार** को, *निबन्ध के लिए* **डॉ० पुष्पारानी** गर्ग को, *आलोचना के लिए* **संतोष कुमार तिवारी** को तथा *कविता के लिए* **बलबीर सिंह करुण** को अखिल भारतीय पुरस्कार पूर्व राज्यपाल **टी०एन० चतुर्वेदी** ने प्रदान किए। समारोह की अध्यक्षता संस्कृति मन्त्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने की तथा धन्यवाद ज्ञापन अकादमी के निदेशक डॉ० देवेन्द्र दीपक ने किया।

प्रो० फूलचंद जैन को अहिंसा इंटरनेशनल पुरस्कार

वाराणसी। संस्कृत विश्वविद्यालय के जैन दर्शन विभाग के **प्रो० फूलचंद जैन** को अहिंसा इंटरनेशनल, नई दिल्ली की ओर से डिप्टीमल आदीश्वर लाल अहिंसा इंटरनेशनल साहित्य पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की गयी है। उन्हें यह सम्मान नई दिल्ली स्थित श्रीराम सेंटर सभागार में 26 अप्रैल को दिया गया।

'चक्रधर सम्मान' आलोक मेहता को

ग्वालियर की सनातन धर्म शिक्षा मण्डल समिति का प्रतिष्ठित 'चक्रधर सम्मान' वर्ष 2008-09 वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक **आलोक मेहता** को उनकी यात्रा-विवरण एवं पर्यटन पुस्तक 'सफर सुहाना दुनिया का' के लिए प्रदान किया गया।

शहीद राजपाल देव सम्मान

दिल्ली स्थित कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल के सभागार में कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री टी०एन० चतुर्वेदी की अध्यक्षता में डी०ए०वी कॉलेज एवं स्कूल के दो वरिष्ठ अध्यापकों के साहित्य-लेखन पर पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये के पुरस्कार प्रदान किये गये।

'नटवर गीत सम्मान 2009' घोषित

शोधपरक सत्-साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य सागर' द्वारा *गीत विधा के लिए* राष्ट्रीय स्तर पर प्रवर्तित 'नटवर गीत सम्मान' इस वर्ष विदिशा के **श्री जगदीश श्रीवास्तव** को भोपाल में दिया जाएगा। इसकी घोषणा करते हुए पत्रिका के सम्पादक श्री कमलकान्त सक्सेना ने बताया कि सम्मान के प्रथम वर्ष में पूरे देश से तीन दर्जन प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई थीं। जिनके परीक्षण एवं मूल्यांकन के बाद श्री जगदीश श्रीवास्तव को सर्वाधिक अंक-औसत के आधार पर विजेता घोषित किया गया। गीतकार को 11,000/- की नगद राशि, श्रीफल, शॉल तथा सम्मान-पत्र देकर अभिनन्दित किया जाएगा।

प्रविष्टि आमंत्रित

रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार समिति के संयोजक ने सूचित किया है कि पाठकों को सन् 2008 में प्रकाशित किसी युवा लेखक की कहानी इस योग्य लगी हो कि उसे रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार प्रदान किया जा सके, तो अपनी संस्तुति सहित उसकी प्रति 31 मई तक संयोजक को सी-3/51, सादतपुर, दिल्ली-110094 के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।

संगोष्ठी/लोकार्पण

नारी लेखन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

श्री एस०डी० पटेल आर्ट्स एण्ड सी०एम० पटेल कॉमर्स कॉलेज, आँकलाव व गुजरात साहित्य अकादमी, गाँधी नगर के सामूहिक तत्त्वावधान में 'नारी लेखन : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में प्रख्यात कथाकार डॉ० नमिता सिंह मुख्य अतिथि तथा इण्डियन ऑयल कारपोरेशन के हिन्दी प्रभारी डॉ० माणिक मृगेश विशिष्ट अतिथि के रूप में आमन्त्रित थे। नमिता सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में अतीत से वर्तमान तक स्त्री लेखन के विषय में सोदाहरण विस्तार से चर्चा की। नमिता सिंह ने कहा कि यह नवजागरण काल का प्रभाव था कि नारी विमर्श के मुद्दे उन्नसवीं सदी के आरम्भ से उठने शुरू हुए। विभिन्न समाज सुधार आन्दोलनों ने चारदीवारी में बन्द स्त्री मुक्ति के अभियान को गति दी।

डॉ० माणिक मृगेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य का प्रयोजन मात्र कला के लिये कला वाला सिद्धान्त नहीं होना चाहिए बल्कि साहित्य का उद्देश्य समाज को दिशा देने वाला होना चाहिए। प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्यकार मशालची की तरह होता है। नारी रचनाकारों ने अतीत से अब तक हर काल में क्रान्ति की है।

संगोष्ठी को दो सत्रों में विभक्त किया गया था। प्रथम सत्र महादेवी वर्मा पर तथा दूसरा मन्नू भंडारी पर केन्द्रित था।

पहले सत्र की अध्यक्षता डॉ० आलोक गुप्त (अहमदाबाद) ने की। डॉ० दयाशंकर त्रिपाठी (सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद) ने महादेवी वर्मा तथा मन्नू भंडारी के साहित्य पर मुख्य वक्तव्य दिया। विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो० घनश्याम सनाढ्य को आमन्त्रित किया गया। उन्होंने तत्कालीन अंग्रेजी और हिन्दी कहानियों का उल्लेख करते हुए हिन्दी कहानी की सामाजिकता की चर्चा की। डॉ० विमलेश तेवतिया ने 'शृंखला की कड़ियाँ' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो० पारूकांत देसाई ने की। मुख्य वक्ता थे डॉ० मदनमोहन शर्मा। विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ० दयाशंकर त्रिपाठी को आमन्त्रित किया गया। डॉ० ओमप्रकाश गुप्त व डॉ० शिवप्रसाद शुक्ल ने महादेवी वर्मा तथा मन्नू भंडारी के साहित्य पर केन्द्रित आलेख प्रस्तुत किये। प्रो० पारूकांत देसाई ने समसामयिक परिदृश्य को प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्त्री चेतना को निरन्तर संघर्ष करने की जरूरत है क्योंकि आज भटकाव के रास्ते भी खुले हुए हैं। संगोष्ठी में गुजरात प्रान्त के विभिन्न कॉलेजों के 50 से अधिक हिन्दी के प्राध्यापकगण प्रतिभागी के रूप में उपस्थित थे जिन्होंने संगोष्ठी में सक्रिय भागीदारी की।

भारतीय नीति-वाङ्मय पर संगोष्ठी

चेन्नई की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था साहित्यानुशीलन समिति की ओर से भारतीय नीति-वाङ्मय पर अनुशीलन-गोष्ठी का आयोजन किया गया। हिन्दी प्रचार सभा के प्रांगण में समायोजित इस समावेश में समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने स्वागत-वक्तव्य दिया और समिति के संरक्षक एवं बिहार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री शोभाकांतदासजी ने अंगवस्त्रम् की भेंट देकर अनुशीलकों को सम्मानित किया। प्रपत्र-वाचन के क्रम में डॉ० निर्मला एस० मौर्य ने 'नीतिकार तुलसी और मानस', डॉ० पी०सी० कोकिला ने 'गिरधर कविराय के काव्य में नीति-निरूपण', डॉ० लक्ष्मी अय्यर ने 'वेमना के पदों में नैतिकता', सुश्री दुर्गारानी ने 'रहीम के नीतिपरक दोहे', डॉ० अशोककुमार द्विवेदी ने 'संत कवि सुंदरदास की व्यावहारिक नीति' श्री धनशेखरन ने 'तमिल ग्रन्थ नालडियार में नैतिक मूल्य' डॉ० पी०आर० वासुदेवन ने 'कविवर रहीम के नीति-सूत्र' एवं डॉ० इंदरराज वैद ने 'चारण कवि किरपाराम रचित राजिया का दूहा' पर अपने अनुशीलन-आलेख प्रस्तुत किये।

वर्तमान जनजातीय समाज : दशा एवं दिशा पर संगोष्ठी

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवाँ के जनजातीय अध्ययन केन्द्र के तत्त्वावधान में वर्तमान जनजातीय समाज : दशा एवं दिशा विषय पर ऐतिहासिक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी को दो सत्रों में विभाजित किया गया था। प्रथम सत्र उद्घाटन सत्र एवं द्वितीय सत्र विचार विमर्श सत्र था। प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ० अनिल पाण्डेय ने कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों में जनजातियाँ निवास करती हैं। जिन्हें मूल निवासी या आदिवासी कहा जाता है। आज इन जनजातियों की जो दुर्दशा हमें दिखाई दे रही है, वह प्राचीन वर्ण-व्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ विदेशी चालों का परिणाम है।

अध्यक्षीय अभिभाषण में इतिहासकार एवं विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो० शिवनारायण यादव ने कहा कि हिन्दुस्तान को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग इण्डिया है, जो दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े महानगरों में बसता है। दूसरा भाग भारत है, जो रीवाँ जैसे छोटे-छोटे शहरों, कस्बों में बसता है। तीसरा भाग भारतवर्ष है, जहाँ अभी तक विकास की कोई किरण नहीं पहुँची है। यही असली भारत है। जो लोग यहाँ रहते हैं, उन्हें आदिवासी कहा जाता है। ये आदिवासी हमारी प्राचीन संस्कृति और प्राकृतिक सम्पदा के रखवाले हैं। अब उन्हें अपने साथ जोड़ना है, तभी असली हिन्दुस्तान की खोई हुई पहचान प्राप्त की जा सकती है। प्रो० विजय अग्रवाल ने जनजातियों की जीवन-शैली पर प्रकाश डाला। डॉ० चन्द्र प्रकाश पटेल आदि ने शोधपत्र का वाचन किया।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 24वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में '24वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन संस्थान के सर सी०वी० रमन व्याख्यान-कक्ष में किया गया।

समारोह का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ० मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने संगोष्ठियों के अनवरत आयोजन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की।

संगोष्ठी के संयोजक व संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ० दिनेश चमोला ने संगोष्ठी की अनवरतता, उपयोगिता व शब्द की अनेकार्थकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऐसी संगोष्ठियाँ ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा बनाए गए मानक शब्दों पर अनुप्रयोग की मुहर लगा सकती हैं। हिन्दी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त विज्ञान अधिसंख्य लोगों तक पहुँच कर अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है।

संगोष्ठी सत्र में सर्वप्रथम श्री सचिन कुमार ने 'उच्च ताप पर जैविक पदार्थों से जैविक इथेनॉल का उत्पादन' विषय पर, श्री कमलकुमार मौर्य ने 'पेट्रोलियम पिच प्रतिदर्शों के मानयोग का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर, सुश्री पूजा यादव ने 'खाद्य श्रेणी हेक्सेन में बेन्जीन तथा अन्य बहुचक्रीय ऐरोमैटिकों के पृथक्करण की आवश्यकता' विषय पर, श्री सुनील पाठक ने 'ईंधन बचत' विषय पर प्रभावी प्रस्तुतियाँ दी।

दक्षिण एशियाई देशों के सहयोग संगठन के लेखकों का महासम्मेलन

आगरा स्थित एक होटल में दि फाउंडेशन ऑफ सार्क राइटर्स एण्ड लिटरेचर द्वारा चार दिवसीय '29वें सार्क फेस्टिवल ऑफ लिटरेचर' का आयोजन किया गया। दक्षिण एशियाई देशों के सम्मेलन-सार्क के साहित्यकारों के इस महासम्मेलन का आरम्भ करते हुए फाउंडेशन की संस्थापक-अध्यक्ष वरिष्ठ लेखिका अजीत कौर ने आगंतुक साहित्यकारों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के विचारार्थ विषय 'आतंकवाद का साहित्य पर प्रभाव' की प्रस्तावना में कहा कि आतंकवाद से देशों के बीच दूरियाँ बढ़ सकती हैं, लेकिन साहित्य को सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। सम्मेलन का उद्घाटन सार्क सचिवालय के

महासचिव डॉ० शीलकांत शर्मा ने किया। सार्क में सम्मिलित देश—पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान व मालदीव तथा भारत के अतिरिक्त अफगानिस्तान, म्यांमार के सौ के लगभग साहित्यकार सम्मिलित हुए। सम्मेलन का समापन-समारोह दिल्ली में आयोजित किया गया। सम्मेलन में विचार व्यक्त करते हुए लेखकों का कहना था कि आतंकवादी इंसान नहीं हैं, उनकी बिरादरी ही अलग है; उनका न कोई धर्म होता है, न विचार। हम उनसे सीधे तो नहीं निपट सकते, लेकिन संवेदनाओं को जगाने की ताकत तो हम लोगों में है और हमें यही काम बखूबी करना होगा।

नटरंग प्रतिष्ठान में व्याख्यान

नई दिल्ली में साहित्य अकादमी के सभागार में नटरंग प्रतिष्ठान द्वारा दो दिन तो व्याख्यानों का आयोजन किया गया। पहले दिन प्रसिद्ध रंगकर्मी राज विसारिया और दूसरे दिन प्रख्यात वयोवृद्ध नाट्य अभिनेत्री जोहरा सहगल ने अपने वक्तव्यों में अपने अनुभव और रंगकर्म की दशा और दिशा पर अपने विचार रखे तथा श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कालजयी स्वर सम्पदा

नई दिल्ली के आकाशवाणी के सभागार में आकाशवाणी ध्वनि अभिलेखागार द्वारा आयोजित 'कालजयी स्वर सम्पदा' कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा दिए गए 'भारतीय सांस्कृतिक परम्परा और रवीन्द्रनाथ टैगोर' विषयक भाषण की रिकॉर्डिंग की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम में डॉ० नामवर सिंह ने विशिष्ट अतिथि पद से आचार्य जी पर अपना वक्तव्य दिया। इस अवसर पर आचार्य जी के सुपुत्र डॉ० मुकुंद द्विवेदी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने किया।

इलेक्ट्रॉनिक युग में पुस्तकों की भूमिका

छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति एवं संधान संस्थान तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय साहित्य महोत्सव का आयोजन किया गया। 'इलेक्ट्रॉनिक युग में पुस्तकों की भूमिका' विषय पर जनसंचार विश्वविद्यालय के उपकुलपति सच्चिदानंद जोशी, विशिष्ट अतिथि स्कूली शिक्षा सचिव नंदकुमार, छत्तीसगढ़ ग्रन्थ अकादमी के संचालक रमेश नैयर आदि ने अपने विचार रखे।

रामेन्द्र तिवारी स्मृति सम्मान समारोह

जबलपुर की साहित्यिक संस्था 'कादंबरी' द्वारा स्व० रामेंद्र तिवारी की स्मृति में अखिल भारतीय साहित्यकार-पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'कादंबरी स्मारिका' सहित विष्णु पाण्डेय की कृति 'जाबालिपुरम', केशव पाठक की 'काव्य कला', डॉ० गार्गीशरण मिश्र की 'टुडे एजूकेशन', रवीन्द्र बहादुर सिन्हा की 'रेलनामा' आदि आठ कृतियों का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता जे०पी० शुक्ल ने की।

विश्व बाजार में हिन्दी

नई दिल्ली में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के तत्त्वावधान में डॉ० कर्ण सिंह ने 'विश्व बाजार में हिन्दी' नामक पुस्तक का विमोचन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि भाषा के क्षेत्र में बाजार की अहमियत को नकारा नहीं जा सकता है। इस अवसर पर श्री रामशरण जोशी एवं श्री हिमांशु जोशी ने भी अपने विचार रखे।

'अस्मिता की अग्निपरीक्षा' व 'साकार'

इंदौर में मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति एवं नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया के संयुक्त तत्त्वावधान में समिति के भवन में डॉ० मीनाक्षी स्वामी की पुस्तक 'अस्मिता की अग्निपरीक्षा' तथा डॉ० कमल डफाल की पुस्तक 'गुड़िया' का लोकार्पण ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुजहत हसन व न्यायमूर्ति श्री वी०डी० ज्ञानी द्वारा किया गया।

नवम राष्ट्रीय बाणभट्ट समारोह

रीवाँ स्थित 'प्राणलोक' संस्था के तत्त्वावधान में मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति संचालनालय, भोपाल के सहयोग से बाण जन्मभूमि भमरसेन (प्रीतिकूट) में सोन नदी के तट पर नवम राष्ट्रीय बाणभट्ट समारोह का आयोजन किया गया। महाकवि बाणभट्ट की 1418वीं जयंती पर आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता डॉ० देवनारायण झा, प्राचार्य स्नातकोत्तर साहित्य विभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ने की तथा मुख्य अतिथि का दायित्व डॉ० शुकदेव शर्मा, आचार्य विश्वेश्वरानन्द वैदिक अनुसंधान संस्थान, होशियारपुर ने निभाया। विशिष्ट अतिथि डॉ० हेमलता बोलिया, विभागाध्यक्ष संस्कृत, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर थीं।

संस्था के अध्यक्ष दर्शन राही ने संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए अपने उद्बोधन में आयोजन की उपलब्धियों को रेखांकित किया। 'कादम्बरी का काव्य सौन्दर्य' विषय पर निर्धारित संगोष्ठी में शोध आलेख प्रस्तुत किये गये तथा उन पर चर्चाएँ हुईं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का प्रतिनिधित्व

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी अमलनेर, महाराष्ट्र में सम्पन्न हुई जिसमें छत्तीसगढ़ के साहित्यकार व प्राध्यापकों में डॉ० बृजेश सिंह वरिष्ठ साहित्यकार समीक्षक, डॉ० उषा तिवारी प्राध्यापिका, डॉ० डी०एस० ठाकुर प्राध्यापक, डॉ० जगदीश कुलदीप, श्रीमती रेखा दुबे प्राध्यापक, डॉ० शिवानी साहा प्राध्यापक तथा श्रीमती गीता तिवारी प्राध्यापक ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में कार्यालयीन हिन्दी व अनुवाद एवं अनुसंधान प्रविधि पर देश के विभिन्न प्रक्षेत्रों से आये दो सौ विद्वान प्राध्यापकों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। संगोष्ठी में विकास-संस्कृति पत्रिका के नवम-अंक का विमोचन भी सम्पन्न हुआ। साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु साहित्यकार डॉ० बृजेश सिंह को सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ० दंगल झाल्टे निदेशक केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो दिल्ली, अध्यक्ष डॉ० सूर्यनारायण रणसुबे प्रसिद्ध अनुवादक/समीक्षक तथा समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ० सुरेश गौतम दिल्ली व अध्यक्ष डॉ० नंदलाल कल्ला प्राध्यापक जोधपुर थे।

बहुवचन, पुस्तक वार्ता और हिन्दी विमर्श का लोकार्पण

दिल भरा है..... वैसे ही जैसे यह हॉल भरा है; हिन्दी के वरिष्ठतम आलोचक और महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० नामवर सिंह ने जब त्रिवेणी सभागार नई दिल्ली में यह वाक्य कहा तो बरबस लोगों का ध्यान गया कि खचाखच भरे त्रिवेणी सभागार में न सिर्फ साहित्य बल्कि इतिहास, समाजशास्त्र, नाटक, पत्रकारिता जैसे तमाम अनुशासनों की जानीमानी हस्तियाँ विराजमान थीं। अवसर था महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की तीन महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं बहुवचन, हिन्दी लैंग्वेज डिस्कोर्स एण्ड राइटिंग तथा पुस्तकवार्ता के नये स्वरूप एवं कलेवर में प्रकाशित अंकों के लोकार्पण का। इनको लोकार्पित करने के लिये जहाँ मंच पर कुलाधिपति नामवर सिंह एवं कुलपति विभूतिनारायण राय के साथ वरिष्ठ कवि कुँवर नारायण, पूर्व कुलपति एवं कवि-आलोचक अशोक वाजपेयी, प्रख्यात सम्पादक एवं कलाकार राजेन्द्र यादव बैठे थे वहीं इसके साक्षियों में प्रो० सुधीरचंद्र, प्रो० निर्मला जैन, रवीन्द्र कालिया, राज बिसारिया, पद्मा सचदेव, प्रो० सुधीर पचौरी, अखिलेश, देवेन्द्रराज अंकुर, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, अभयकुमार दूबे, नीलाभ, गंगाप्रसाद विमल, उपेन्द्र कुमार, अनंत विजय, रविकांत जैसी हस्तियाँ मौजूद थीं। लोकार्पण के साथ अपनी बात रखते हुए वरिष्ठ कवि कुँवर नारायण ने 'बहुवचन' का, श्री अशोक वाजपेयी ने 'हिन्दी : लैंग्वेज डिस्कोर्स एण्ड राइटिंग' का, श्री राजेन्द्र यादव ने 'पुस्तकवार्ता' का क्रमशः लोकार्पण किया।

आर्ष दर्शन पर परिचर्चा

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित पीयूष-प्रियंवदा व्याख्यान माला में प्रो० ए०एच०के० राय ने कहा कि आर्ष-दर्शन सभी विद्याओं के लिए उपयोगी है। इसमें सर्व विद्या

का प्रदीप, सारे कर्मों के उपाय तथा सभी धर्मों का आश्रय निहित है। विकास के प्रयास की गति जब अवरुद्ध होती है तब सभी वस्तुओं को अपने मूल स्रोत की ओर लौटना पड़ता है। ऐसी स्थिति में आज देश के हालात को नियंत्रित करने के लिए हमें वेदों की ओर लौटना होगा। इसी क्रम में प्रो० डी०एन० तिवारी ने कहा कि वेद हमारी धरोहर हैं। क्योंकि वेदों के माध्यम से ही इस देश का नया सृजन कर सकते हैं। इस मौके पर 'भारती विद्या: सत् असत् व भारती विद्या: द्रष्टा पश्यति हि क्रिया' नामक ग्रन्थों का विमोचन किया गया। अध्यक्षता प्रो० यू०सी० दूबे, संचालन डॉ० सच्चिदानंद मिश्र ने किया।

प्रलेस संगोष्ठी एवं लोकार्पण

वाराणसी। प्रगतिशील लेखक संघ और सर्जना साहित्य मंच की ओर से यूपी कॉलेज के सभागार में विगत दिनों जवाहरलाल कौल 'व्यग्र' की पुस्तक 'युग पुरुष' का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर 'हाशिये का समाज और युगस्रष्टा डॉ० अम्बेडकर' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई।

मुख्य अतिथि श्रीपाल सिंह 'क्षेम' ने कहा कि पुस्तक में सत्ताहीन और दलितों को अधिकार दिलाने की बात की गई है। अध्यक्षता करते हुए पूर्व राज्यपाल माता प्रसाद ने कहा कि इस पुस्तक में डॉ० अम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन सामने आया है। इस सत्र में डॉ० रामसुधार सिंह, शिवकुमार पराग और डॉ० शाहिनी आदि ने विचार व्यक्त किया। दूसरे सत्र में आयोजित संगोष्ठी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० चौथीराम यादव ने कहा, 'समाज का तीन-चौथाई हिस्सा हाशिए पर है और एक चौथाई मुख्यधारा में।' मुख्य अतिथि कंवल भारती ने कहा, 'भारतीय सिस्टम ही भ्रष्ट है। जब तक यह सिस्टम नहीं बदलता, मुख्यधारा में जाने की बात बेमानी होगी।' इस सत्र में नृपेन्द्र नारायण सिंह, डॉ० के०एल० सोनकर आदि ने विचार व्यक्त किए।

'गीताभ' का छठा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

विगत दिनों गाजियाबाद के गांधर्व संगीत महाविद्यालय के छठे वार्षिकोत्सव 'गीताभ' की अध्यक्षता समालोचक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने की। सुप्रसिद्ध कवि श्री राजनारायण बिसारिया मुख्य अतिथि तथा सुप्रसिद्ध नवगीतकार श्री देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र' विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके साथ मंच पर संस्था के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग' तथा संरक्षक द्वय श्री से०रा० यात्री व श्री बी०एल० गौड़ भी उपस्थित थे। समारोह में संस्था के चुने हुए 35 कवियों की काव्य रचनाओं का संकलन 'गीताभ-6' तथा स्मारिका 'गीतोत्सव-2009' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट कवि के रूप में चर्चित गीतकार-गजलकार डॉ० कुँअर बेचैन का तथा विशेष सहयोग के लिए दो सदस्यों मीरा शलभ तथा डॉ० तारा गुप्ता को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन श्री देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र' की अध्यक्षता में सम्पन्न काव्य-गोष्ठी के साथ हुआ, जिसमें सर्वश्री कुँअर बेचैन, श्याम निर्मम तथा वी०के० वर्मा 'शैदी', राजनारायण बिसारिया आदि ने काव्य पाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ कवि श्रीकृष्ण मित्र ने किया।

पुस्तकें : भाषा, सभ्यता और समाज

पूर्व सूचना आयुक्त व प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ० ओ०पी० केजरीवाल ने कहा है कि पुस्तकों के माध्यम से समाज में एकता तभी पैदा हो सकती है जबकि उनमें विद्वेष उत्पन्न करने वाले तत्त्वों का कोई स्थान न हो। कुछ पुस्तकें सामाजिक एकता में दरार पैदा कर रही हैं जो उचित नहीं है। पुस्तकों में भाषा के स्तर पर आ रही गिरावट भी चिन्ताजनक है। डॉ० केजरीवाल मोतीलाल मानव उत्थान समति की ओर से आयोजित गोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। 'सामाजिक एकता में पुस्तकों की भूमिका' विषयक गोष्ठी में उन्होंने कहा कि जिस तरह से समाज के हर वर्ग में गिरावट आई है उसी प्रकार से पुस्तकों की विषय वस्तु में भी गिरावट दर्ज की जा रही है। अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० युगेश्वर ने कहा कि श्रेष्ठ व अच्छी किताबें अच्छा समाज बनाती हैं। एक अच्छी पुस्तक करोड़ों लोगों के जीवन में सुधार तक ला देती है। विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रकारिता विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० एचए आजमी ने कहा कि समाज के निर्माण में कथाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। किताबें सभ्यता की कड़ियों को जोड़ती हैं।

मुक्ति की नायिका हैं महादेवी : प्रो० त्रिपाठी

कुमाऊँ विश्वविद्यालय की महादेवी वर्मा सृजन पीठ तथा महिला समाख्या, उत्तराखण्ड के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों देहरादून में 'लोकगीतों में स्त्री' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात आलोचक एवं विचारक प्रो० विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा 'रात के उर में दिवस की चाह' शीर्षक से दिए गये पंचम महादेवी वर्मा स्मृति व्याख्यान से हुआ।

प्रो० त्रिपाठी ने कहा कि महादेवी को करुणा व वेदना की गायिका कहकर प्रचारित किया गया है लेकिन हालिया शोध का निष्कर्ष है कि महादेवी प्रखर राजनीतिक चेतना से लैस थीं। छायावाद के चारों स्तम्भों में वह अकेली थीं जिन्होंने इन्दिरा गांधी से मधुर संबंध होने के बाद भी आपातकाल लगाने का मुखर विरोध किया। यही निर्भीकता उनके साहित्य में भी दिखती है। ये विचित्र बात है कि साहित्य में महिलाओं और दलितों का उदय एक साथ होता है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए भारतीय भाषा केन्द्र, जेएनयू के पूर्व अध्यक्ष प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि महादेवी के लेखन में जूझने की प्रवृत्ति है। वह समाधान के लिए वैचारिक संघर्ष करती हैं। उनका सम्पूर्ण लेखन हमें जीवन और जगत से सजग बनाता है। महादेवी अकेली छायावादी कवयित्री हैं जिन्होंने लेखकीय एकांत का चुनाव करने के बजाय स्वाधीनता आन्दोलन में भूमिका निभाई। महादेवी का लेखन एक तरह से उनके अपने जीवन, देश और नारी मुक्ति का संघर्ष है। वह भारत की पहली स्त्रीवादी दार्शनिक हैं।

महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो० बटरोही ने कहा कि उन्होंने सिमोन दि बोउवा से पहले महिला मुक्ति की बात 'शृंखला की कड़ियाँ' में व्यक्त कर दी थी। इस अवसर पर स्मारिका 'मीरा कुटीर से महादेवी वर्मा सृजन पीठ तक' का लोकार्पण तथा 'संभव' नाट्य मंच द्वारा महादेवी वर्मा के स्मृति चित्र 'लछमा' (नाट्य रूपांतर मन्नू भण्डारी) का मंचन किया गया।

दूसरे दिन प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए दूरदर्शन के पूर्व समाचार सम्पादक राजेन्द्र धस्माना ने कहा कि लोकगीतों से हम जीवन से जुड़ते हैं। साहित्य की जड़ें ढूँढ़नी हो तो वह 'लोक' में मिलेंगी। दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा ने कहा कि लोकगीत कहीं से भी हों, उनका मूल स्वर एक है। यह लोकगीत एक तरह से स्त्रियों के शिकायतनामे हैं। लोकगीतों में स्त्री मौजूद है या स्त्रियों में लोकगीत समाये हैं, यह विचारणीय है। उन्होंने कहा कि लोकगीत नहीं होते तो साहित्य भी नहीं होता।

तीसरे दिन के प्रथम सत्र में 'उत्तराखण्ड के लोकगीतों में व्यक्त समाज' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। सत्र की अध्यक्षता करते हुए विकास नारायण राय ने कहा कि लोकगीतों के अधिकांश हिस्से को कूड़े के ढेर में फेंक दिया जाना चाहिए क्योंकि यह सिर्फ नकारात्मक पक्ष उजागर करता है। हमारे घर-परिवारों में ही लड़कियों को निरंतर कमजोर बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें किसी निर्णय में शामिल नहीं किया जाता। जब तक महिलाओं की लड़ाई हर घर-परिवार में नहीं लड़ी जायेगी तब तक स्थितियों में बदलाव नहीं होने वाला। परिचर्चा में मैनेजर पाण्डेय, पंकज बिष्ट,, क्षितिज शर्मा, लीलाधर जगूड़ी आदि ने भाग लिया।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए नारीवादी आन्दोलन से जुड़ी कथाकार सुधा अरोड़ा ने कहा कि परिवार के जुड़ाव के चित्रण के साथ ही शोषित और संघर्ष की पहचान हमें लोकगीतों ने दी। लोकगीतों को यदि जनगीतों से जोड़ा जाए तो इनका स्वर और अधिक मुखर होगा। इस त्रिदिवसीय आयोजन में विद्यासागर नौटियाल, सुभाष चन्द्र कुशवाहा, गौरीनाथ, सुभाष पन्त, जितेन ठाकुर आदि ने भाग लिया।

पुस्तक परिचय

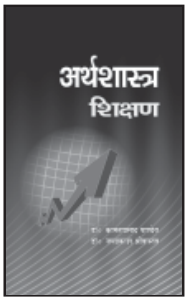

अर्थशास्त्र शिक्षण

डॉ० के०पी० पाण्डेय
डॉ० जयप्रकाश श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 208

सजि. : रु० 150.00 **ISBN : 978-81-7124-689-2**

अजि. : रु० 80.00 **ISBN : 978-81-7124-690-8**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

21वीं सदी में आर्थिक परिवेश बड़ी तेजी से परिवर्तित हो रहा है। आज की तथाकथित मंदी जो पूरे वैश्विक सन्दर्भ को आन्दोलित करने जा रही है, हमारे भारतीय विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों में कार्यरत अर्थशास्त्र विषय के शिक्षकों से एक विशेष एवं अहम् भूमिका की अपेक्षा रखती है। इस परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियों में नवीनतम युक्तियों का अनुप्रयोग नितान्त अपरिहार्य बन गया है। यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उक्त क्रम में अर्थशास्त्र विषय की अध्येय विषय-वस्तु में नया स्वरूप एवं आयाम जोड़ने हेतु शिक्षकों एवं शिक्षाशास्त्र (पेडागॉजी) के विद्वानों को आवश्यक पहल करनी होगी जिससे इस विषय के सम्यक् शिक्षण द्वारा नवीन अन्तर्दृष्टि, सूझबूझ एवं प्रवीणताओं को विकसित करने में मदद मिल सके।

प्रस्तुत ग्रन्थ लेखक द्वारा पूर्व में प्रणीत प्रथम रचना के रूप में लोकप्रिय रहा है। इस नवीन एवं परिवर्धित संस्करण के अन्तर्गत विषय-वस्तु में परिवर्तित सन्दर्भों की अपेक्षानुसार नवीनता लायी गयी है जिससे शिक्षकों को इस विषय के प्रभावी शिक्षण की व्यवस्था गठित करने में उचित दिशा निर्देश प्राप्त हो सके। पूरी पुस्तक में संरचनात्मक परिवर्तन लाने के साथ अध्यायों के संगठन एवं उनकी गुणवत्ता की दृष्टि से मूल रचना की प्रकृति यथावत् रखी गयी है जिससे पाठ्य-वस्तु एवं उभरते नूतन मुद्दों को वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता के साथ विश्लेषित किया जा सके।

विषय-सूची

अर्थशास्त्र : अभिप्राय तथा कार्य-क्षेत्र/आर्थिक विचारों का संक्षिप्त इतिहास एवं अर्थशास्त्र विषय की वस्तुनिष्ठता/अर्थशास्त्र की शिक्षा का महत्त्व एवं शिक्षा में स्थान/अर्थशास्त्र-शिक्षण के उद्देश्य/अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियाँ/अर्थशास्त्र शिक्षण : प्रविधियाँ एवं सहायक सामग्री/अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकें/अर्थशास्त्र शिक्षक की प्रवीणताएँ/अर्थशास्त्र शिक्षण का अन्य विषयों की शिक्षा से समन्वय/अर्थशास्त्र का विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर प्रस्तुतीकरण/अर्थशास्त्र शिक्षण में मूल्यांकन तथा क्रियात्मक अनुसन्धान एवं मूल्यांकन विधि का प्रयोग/अर्थशास्त्र में वस्तु-निष्ठ परीक्षण/अर्थशास्त्र शिक्षण में पाठ-योजना का निर्माण

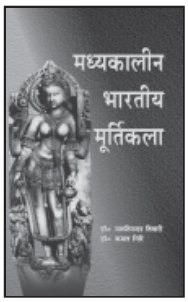

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला

डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी
एवं डॉ० कमल गिरि

प्रथम संस्करण : 1991 ई०

पृष्ठ : 224+80 पृ० चित्र

सजि. : रु० 200.00 **ISBN : 81-7124-077-1**

अजि. : रु० 150.00 **ISBN : 81-7124-077-1**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला शीर्षक प्रस्तुत ग्रन्थ में 7वीं से 13वीं शती ई० के मध्य की भारतीय मूर्तिकला के विकास का सांगोपांग विवेचन हुआ है। गुप्तकाल तक की भारतीय मूर्तिकला पर कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं किन्तु मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला पर प्रामाणिक और समग्र पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। इस दिशा में यह पुस्तक एक गंभीर प्रयास है। मध्यकाल विभिन्न क्षेत्रीय राजवंशों के बीच संघर्षों और समझौतों का काल था। इस अवधि में कला और संस्कृति के विकास की धारा पूर्ववत् बनी रही, केवल उसके बाह्य स्वरूप में विस्तार और परिवर्तन हुआ। राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप भारतीय मूर्तिकला में भी क्षेत्रीय तत्त्वों की प्रधानता रही, जिसके फलस्वरूप एलोरा एवं एलिफैण्टा में महाकाय, महाबलिपुरम एवं तंजौर में लंबी और संयत कायावाली तथा खजुराहो, भुवनेश्वर, हलेबिड तथा बेलूर में अलंकरण और कामप्रधान मूर्तियाँ बनीं। लेखकद्वय ने विभिन्न स्थलों की सामग्रियों का बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण-परीक्षण किया है और मध्यकालीन मूर्तिकला की क्षेत्रीय विशेषताओं के रेखांकन में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं। प्रारंभिक अध्यायों में मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा सामान्य विशेषताओं की चर्चा हुई है। तत्पश्चात् पल्लव, चोल, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल, गुर्जर-प्रतिहार, चन्देल, कलचुरि, परमार, चौलुक्य, पाल एवं अन्य क्षेत्रीय शैलियों की विषय-वस्तु और कलात्मक विशेषताओं की दृष्टि से विस्तृत विवेचना की गई है। अन्त में विस्तृत सन्दर्भ-सूची और 80 चित्र भी दिये गये हैं।

हरा-भरा चाँद

स्वप्नलेक
चन्द्रलोक
होली, 2021

प्रिय इन्दु,

प्रशांत सागर और स्वप्न लेक के संगम पर अपने इस छोटे से बँगले में बैठा धरती माता के दर्शन करने के लिए आकाश की ओर आँख उठाये बैठा हूँ। आकाश मेघाच्छन्न है, रात से ही पानी बरस रहा है, बर्फानी हवा के झोंके सिहरन पैदा कर रहे हैं।

पाँच वर्ष बाद यह पत्र लिख रहा हूँ। शायद तुम आश्चर्य कर रहे होगे कि चाँद पर पानी कैसे बरस रहा है? नहीं जानता धरती से हमारा चाँद अब कैसा लगता है पर जब सन् 1992 में हम यहाँ आये तो उपग्रह जैसा तुम सोचते हो वैसा ही था। वायुविहीन, जलविहीन, गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी का एक पंचमांश। यहाँ अभी भी अट्ठारह-बीस फुट ऊपर उछल जाना साधारण बात है। तब दिन में गर्मी ऐसी पड़ती कि पानी खौलने लगे तो रात में ठंड इतनी होती थी कि हवा जम जाय। प्रभात-शाम का पता नहीं था, एक दम से दिन या रात हो जाते थे। चारों ओर काली चट्टानें, ऊँचे पर्वत, दीवारों (एक या दो मील ऊँची) से घिरे गोलाकार मैदान और सन्नाटा। ऐसी भूमि पर कौन जीव रह सकता था?

हम यहाँ आये तो अपने कैप्स्यूल में रहते थे और स्पेससूट में ही बाहर निकल सकते थे। दिन यहाँ दो हफ्ते के और रात दो हफ्ते की होती है, यानी महीने में सिर्फ एक दिन। तुम कल्पना नहीं कर सकते कि कितनी परेशानी होती थी, कैसा मन ऊबता था। हम चार आदमी थे, गप्प लड़ाते भी तो कब तक, कितनी? पढ़ना, रेडियो सुनना और चन्द्र-अनुसंधान करना, बस इतना ही तो काम था।

फिर प्रोफेसर हरितचंद्र यहाँ पधारे। पहली ही भेंट में उन्होंने हमें मोह लिया। बड़े खुशमिजाज और मेधावी विद्वान हैं।

मधु सागर के तट पर संत बेख क्रेटर में उनका अपना विशाल बँगला है। हाँ, तो प्रोफेसर हरित एक दिन बोले—''भाई ये तो बड़ा बोर ग्रह है। अमाँ स्टेशन पर खड़े रेल के डिब्बों में पड़े रहना भी कोई जिन्दगी है?''.....

चन्द्रलोक के बारे में शेष विवरण जानने के लिए पढ़ें :

हरा-भरा चाँद

डॉ० भानुशंकर मेहता

मूल्य : सजि. रु० 120.00
अजि. रु० 70.00

प्राप्ति स्थान :
विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

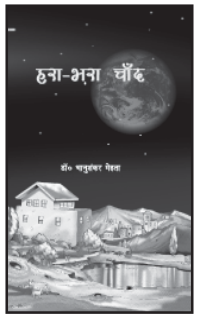

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

गजल के बहाने (पुष्प-दो) : सम्पादक : डॉ० दरवेश भारती, प्रकाशक : अंशु प्रकाशन, दिल्ली, मूल्य : निःशुल्क

हिन्दी और उर्दू भाषा के लगभग 73 कवि-शायरों की गज़लों का संकलित संग्रह है 'गज़ल के बहाने'। सम्पादक ने अपने संकलन में गज़ल की बहरों (छंद) और अक्लों (मात्रा) के प्रयोग के सम्बन्ध में सावधानी बरतने के साथ गज़ल-रचना के सम्बन्ध में व्यावहारिक परामर्श भी दिये हैं जो हिन्दी-गज़लकारों के लिए उपादेय हैं। संकलित गज़लों की भाव-भूमि युगीन-संवेदनाओं को भी अभिव्यक्त करती है। एहतेशाम अख्तर फरमाते हैं—''लबों पर सुर्खियाँ थीं, अब कहाँ हैं /हरी सब खेतियाँ थीं, अब कहाँ हैं।''

मड़ई-2008 : (वर्ष 10, अंक-1), सम्पादक : डॉ० कालीचरण यादव, प्रकाशक : रावत नाच समिति, बिलासपुर

वैश्वीकरण के इस दौर में जबकि बाजार और अनुगामी मीडिया-तंत्र के आर्थिक और सांस्कृतिक-आक्रमण की तीव्रता शिद्दत से महसूस की जा रही है इस बीच लोक संस्कृति की अविरल परम्परा के संधान में 'मड़ई' का प्रकाशन एक सुकून की अनुभूति देने वाला साबित हो सकता है। लोक-परम्परा और संस्कृति का ताना-बाना अपनी क्षेत्रीय विशेषता के साथ लोकसाहित्य में अभिव्यक्त होता है। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है जो किसी भी जीवंत समाज की पहचान हो सकती है। 'मड़ई' में संकलित निबन्ध उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बुन्देलखण्ड, अण्डमान, पूर्वी उत्तर प्रदेश जैसे विभिन्न अंचलों की लोक-संस्कृति की धरोहर का आख्यान प्रस्तुत करते हैं। आकर्षक रेखांकन और प्रकाशन भी 'मड़ई' को पुस्तकीय-प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। देश की भाषाओं-बोलियों में व्याप्त विभिन्न अंचलों का सांस्कृतिक-दर्शन प्रस्तुत करने का यह एक स्तुत्य प्रयास है इसकी निरंतरता के लिए शुभकामनाएँ।

तनाव : (प्राचीन यूनानी कविताएँ), अनुवाद : प्रमोद पाण्डेय, प्रकाशक : वंशी माहेश्वरी, सम्पादक : तनाव, 57, मंगलवारा, पिपरिया (म०प्र०), मूल्य : 10.00 रुपया मात्र

साहित्यिक पत्रिका 'तनाव' की अनुवाद शृंखला में अब तक विभिन्न देशों की काव्य-सम्पदा हिन्दी भाषा में अनूदित होकर हिन्दी के सुधी पाठकों की सुधा को तृप्त करती रही है। यद्यपि यह अनुवाद प्रक्रिया मूल से अंग्रेजी और फिर हिन्दी तक आते-आते रचना की दुहरी-तिहरी कपड़छान कर देती है फिर रचना की मर्म-संवेदना स्पर्श करती है और संप्रेषित हो जाती है, यही इस अनुवाद की खूबी है। प्रस्तुत संग्रह यूनान के 'लिरिक' काव्य के कुछ प्राचीन कवियों की गीत रचनाओं का अनुवाद है। वैयक्तिक स्तर पर रचित इन गीतों में प्रेम और विरह का भाव प्रमुख है। ''यदि तुम्हें पता हो कि कैसे गिनते हैं/सारी पत्तियाँ वृक्षों की/सारी लहरें सागर की/मैं नियुक्त कर दूँगा तुम्हें लेखाकार/अपने समस्त प्रेम-व्यापार का।''

मेरा गाँव : डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय, प्रकाशक : शैवाल प्रकाशन, डी०आई०जी० आवास के सामने, ढलान से नीचे, चन्द्रावती कुटीर, दाऊदपुर, गोरखपुर-273001, मूल्य : 150.00 रु० मात्र संवेदनशील कवि हृदय अपनी मिट्टी-पानी-हवा का स्पंदन पाकर नयी ऊर्जा से स्रष्टा के समानांतर एक नयी रचना करता है और विधाता बन जाता है। जब यही विधाता अपने पैरों के नीचे की धरती को, अपने समग्र परिवेश को पहचानने और महसूस करने की कोशिश करता है तो लिखा जाता है 'मेरा गाँव'। लेखक ने अपनी मिट्टी की गंध को बिखेरते हुए अपने गाँव 'भीटी' के भूगोल, इतिहास और वर्तमान को जिस अनुसन्धान-पूर्ण प्रामाणिकता और ईमानदारी से उकेरा है वह स्पृहणीय है।

शेष (त्रैमासिक, अप्रैल-जून 09) : सम्पादक एवं प्रकाशक : हसन जमाल, पन्ना निवास (साइकिल मार्केट) के पास, लोहारपुर, जोधपुर - 342002, मूल्य : 20.00 रुपया मात्र

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **मई 2009** **अंक : 5**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**